केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 213 शुक्रवार 23 फरवरी 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

हेमन्त मिश्र को मातृ शोक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सामाजिक कार्यकर्ता हेमन्त मिश्र की 90 वर्षीया माता श्रीमती चन्द्रावती का गुरूवार को कटेश्वरपार्क के निकट स्थित गंगा भवन आवास पर निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार अयोध्या के सरयू तट पर किया गया। मुखाग्नि बड़े पुत्र हिमांशु मिश्र ने दिया।

श्रीमती चन्द्रावती देवी के निधन पर अनेक राजनीतिक दलों के नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुये श्रद्धांजलि दिया।

वृद्धाआश्रम में हुई आंख की जांच

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । वृद्धाश्रम बनकटा के 11 लोगों के आंख का जांच किया गया था। उक्त जानकारी देते हुए जिला चिकित्सालय के नेत्र सर्जन डॉ. मयंक पांडेय ने बताया कि वृद्धाश्रम में जाकर सभी लोगों का जांच करके खून का सैंपल लिया गया था तथा रिपोर्ट आने के बाद 8 लोगों का ऑपरेशन किया गया। उन्होने बताया कि सीएसएस मरवटिया के अधीक्षक डा. विनोद कुमार एवं सुपरवाइजर अमन श्रीवास्तव ने एंबुलेंस बुलाकर जिला चिकित्सालय में लेकर आये तथा इनका ओपीडी पर्चा बनाकर इन लोगों को भर्ती किया गया। इसमें सत्यनारायण सक्सेना, रविंद्रनाथ सिंह, बसंत, सरस्वती दुबे, सुभावती, अनरसा, साम्राज्य, शिवपूजन का ऑपरेशन सफलतापूर्वक हुआ।

निष्क्रिय आशाओं को बर्खास्त करने का निर्देश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह ने निष्क्रिय आशाओं को बर्खास्त करने की कार्यवाही करने के लिए मण्डल के तीनों सीएमओ को निर्देशित किया है। मण्डलीय समीक्षा बैठक में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होने पाया कि नवजात बच्चों को घर पर देखने जाने में तमाम आशाए रूचि नही ले रही है। उन्होने यूनिसेफ की मॉनिटरिंग में पाया की आशाओं द्वारा नवजात के घर भ्रमण में मंडल में 85 प्रतिशत है।

डिविजनल हेल्थ कोऑर्डिनेटर यूनिसेफ सुरेंद्र शुक्ल ने बताया कि सांस कार्यक्रम के अंतर्गत बस्ती में प्रशिक्षण कराया जा चुका है तथा सिद्धार्थनगर में अभी प्रशिक्षण कराया जा रहा है। जनपद सिद्धार्थनगर के इटवा ब्लॉक में नया एसएनसीयू स्थापित किए जाने हेतु शासन से धन प्राप्त हो गया है, जिसको इसी फाइनेंशियल ईयर में पूरा करा लिया जायेगा। उन्होने बताया कि एचबीएनसी कार्यक्रम के अंतर्गत आशाओं द्वारा नवजात शिशुओं के भ्रमण में जनपद बस्ती में 65 प्रतिशत, संतकबीर नगर 75 प्रतिशत एवं सिद्धार्थनगर 68 प्रतिशत करायी गयी।

मण्डलायुक्त ने निर्देश दिया है कि एसएनसीयू में कम्युनिटी रेफरल जनपद सिद्धार्थनगर में 8.34 प्रतिशत है, जिसको बढ़ाए जाने की आवश्कता है। डिलीवरी के पश्चात डिलीवरी की एंट्री मंत्र पोर्टल पर अप्रैल से जनवरी तक बस्ती 102 प्रतिशत, संतकबीर नगर 96 प्रतिशत, सिद्धार्थनगर 93 प्रतिशत है, जिसमे सुधार की आवश्कता है। उन्होने बताया कि 0 से 5 साल बच्चो की मृत्यु रिपोर्टिंग प्रतिशत जनपद बस्ती मात्र 13 प्रतिशत ही है, जिसमे सुधार की आवश्कता है। आकांक्षी ब्लॉक की समीक्षा की गई, जिसमे सुधार हुआ है। वीएचएसएनडी में राज्य स्तर से कंपोजिट स्कोर में बस्ती एवम सिद्धार्थनगर कम है। उन्होने बताया कि मंडल में समस्त जनपद में कोल्ड चेन प्वाइंट कैटिगरी में है। बैठक में जिलाधिकारी बस्ती अंद्रा वामसी, सिद्धार्थनगर के पवन अग्रवाल, सीडीओ जयेंद्र कुमार, संत कुमार, सीएमओ डा. आर.एस दुबे तथा विभागीय अधिकारी गण उपस्थित रहे।

परियोजनाओं का शिलान्यास ही नहीं उसे पूरा करने की गारंटी है मोदी सरकार–निर्मला सीतारमण

गोरखपुर (आभा)। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि परियोजनाओं का शिलान्यास ही नहीं उसे पूरा करने की गारंटी मोदी सरकार है। पीएम मोदी के साथ काम करते हुए यह संभव नहीं है प्रोजेक्ट शुरू करो और भूल जाओ। सीतारमण, गुरुवार को गोरखपुर के सिविल लाइंस में आयकर विभाग के नये भवन के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं। सीएम योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में हुए कार्यक्रम में केंद्रीय

वित्तमंत्री ने कहा कि गोरखपुर में महज पांच वर्षों में खाद का नया कारखाना और एम्स शुरू हो गया। क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (आरएमआरसी) का निर्माण सिर्फ तीन साल में पूरा हुआ। तीनों अहम परियोजनाओं का लोकार्पण दिसम्बर 2021 में पीएम नरेन्द्र मोदी ने किया। वित्त मंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार में सरयू नहर परियोजना वर्ष 1978 में शुरू हुई थी। वर्षों से लंबित इस परियोजना का लोकार्पण 11 दिसम्बर, 2021 को पीएम नरेन्द्र मोदी ने किया। अब इस परियोजना से पूर्वांचल के एक दर्जन जनपदों के करीब 29 लाख किसानों का सीधा लाभ मिल रहा है।

केंद्रीय वित्त मंत्री ने सीएम योगी आदित्यनाथ को डायनामिक बताते हुए खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि यूपी में 75 जिले हैं। साल भर में 52 सप्ताह होते हैं। सीएम योगी 75 जिले में साल भर में एक बार जरूर पहुंचते हैं। वह प्रदेश की तरक्की का इंजन हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि आयकर विभाग में पारदर्शिता से काम का नतीजा है कि डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन 16.77 फीसदी बढ़ा है। वित्तीय वर्ष के 10 महीने के अंदर ही 2.48 लाख करोड़ का रिफंड दिया जा चुका है। इसी कलेक्शन का नतीजा है कि बजट में 11.10 लाख करोड़ के निवेश को अनुमति दी जा सकी। उन्होंने कहा कि एक करोड़ आयकर दाता का लाभ देश को मिला है। 1962 से लेकर 2009 तक के 25 हजार रुपये तक के बकाया को भरने की जरूरत नहीं है।

466 छात्र छात्राओं में विधायक अजय सिंह ने किया स्मार्टफोन, टैबलेट का वितरण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। परशुरामपुर ब्लॉक के बिलारी भीटी स्थित कमला पाण्डेय महाविद्यालय के प्रांगण में गुरुवार को स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि हरैया विधायक अजय सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पुष्पार्चन और दीप प्रज्वलन करके किया। महाविद्यालय प्रबन्धक दयाशंकर पाण्डेय, अध्यक्ष प्रहलाद पाण्डेय, प्राचार्य डॉ राम सजीवन वर्मा और स्टाफ के द्वारा मुख्य अतिथि का माल्यार्पण करके व बुके देकर स्वागत किया गया। महाविद्यालय के 466 छात्र छात्राओं को टैबलेट और स्मार्टफोन वितरित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विधायक अजय सिंह ने कहा कि सरकार का सपना स्मार्टफोन से छात्रों को तकनीकी ज्ञान कराने व सुगम पढ़ाई कराने का है। इसी को लेकर छात्रों को स्मार्टफोन का वितरण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि छात्र ही देश के भविष्य हैं इनमें से ही आगे चलकर बड़े पदों पर आसीन होकर देश की सेवा करेंगे।

इस अवसर पर प्रहलाद पाण्डेय, दयाशंकर पाण्डेय, आशुतोष सिंह श्रीश पाण्डेय, राजदत्त शुक्ल, श्रवण तिवारी, पंकज मिश्र, राजमणि मिश्र, कौशलाधीश पाण्डेय, अनंत कृष्ण पाण्डेय, सुनील तिवारी, दिलीप पाण्डेय, अरविंद सिंह, रणजीत पाठक, अजय यादव, पिंटू, अर्जुन यादव, भरत सिंह, हर्ष पाण्डेय, सतीश मिश्र, डॉ राम सजीवन वर्मा, अतुल कुमार पाण्डेय, डॉ सीमा मिश्रा, ज्योत्सना मिश्रा, विष्णुकांत द्विवेदी सहित बड़ी संख्या में छात्र छात्राए और स्थानीय लोग मौजूद रहे।

गनेशपुर में नगर पंचायत अध्यक्ष सोनमती ने किया कान्हा गौशाला का शिलान्यास

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। गुरुवार को गनेशपुर नगर पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती सोनमती चौधरी ने वार्ड नं. 6 लक्ष्मीबाई नगर के गढवल में कान्हा गौशाला की आधारशिला रखी। कहा कि इसके बन जाने से गोवंश की रक्षा हो सकेगी और किसानों को आवारा पशुओं से खेती किसानी में होने वाले नुकसान से मुक्ति मिलेगी। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच उन्होने कान्हा गौशाला की आधारशिला रखी।

गनेशपुर नगर पंचायत की अध्यक्ष सोनमती चौधरी ने कहा कि उनका पूरा प्रयास है कि क्षेत्रवासियों को बेहतर साफ–सफाई, प्रकाश व्यवस्था की सुविधा मिले। इस दिशा में निरन्तर प्रयत्न जारी है। पूर्व विधायक दयाराम चौधरी ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार के कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंच रहा है। विकास की गति में तेजी आयी है।

कान्हा गौशाला के शिलान्यास अवसर पर मुख्य रूप से अधिशासी अधिकारी शिव प्रताप सिंह, दुर्गा प्रसाद चौधरी, मो. आरिफ, राजकुमार शुक्ल, राजन पाण्डेय, आलोक श्रीवास्तव, पप्पू उपाध्याय, राजन श्रीवास्तव, दुर्गेश सोनकर, विक्की श्रीवास्तव, गणेश भारद्वाज, विशाल सिंह, भोलू, शिवनारायन पटेल, कुलदीप यादव, मोल्हू सोनकर, गुड्डू यादव, बालमुकुन्द मिश्र, रिंकू यादव, महेन्द्र चौधरी, अर्जुन चौधरी, रजनीश चौधरी, हरिनाथ चौधरी, लवकुश चौधरी के साथ ही अनेक सभासद और क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे।

बस्ती के विकास में रिंग रोड़ सबसे महत्वपूर्ण कार्य– हरीश द्विवेदी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कुदरहा, (बस्ती)। ब्लाक परिसर में ब्लाक उत्सव के तहत ग्रामपंचायतों में कराए गए परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास बस्ती सांसद ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांसद हरीश द्विवेदी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय व श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण व द्वीप प्रज्वलित कर किया। लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार सर्वसमाज की सरकार है। बिना किसी भेदभाव के हर धर्म और साम्प्रदाय के लोगों को लाभ मिल रहा है। जनपद के विकास में रिंग रोड़ सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। हाल ही में किसानों को मुआवजा मिला है। समूह की महिलाओं को ड्रोन मिलने वाला है। जिसका चयन शीघ्र किया जाएगा। जिससे किसानों को दवा खाद छिड़काव के लिए सुविधा मिल सके। महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए नारी शक्ति बंधन अधिनियम पास कर महिलाओं को हर क्षेत्र में विकास करने का अवसर प्रदान किया है। सांसद हरीश द्विवेदी ने विपक्षी पार्टियों को घेरते हुए कहा कि जाति के नाम पर वोट मांगकर कभी गरीबों का उत्थान नहीं करती हैं। यह पार्टियां जीतने के बाद परिवारवाद विकास व भ्रष्टाचार में लिप्त होकर देश को खोखला बना देती हैं।

ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे व खंड विकास अधिकारी आलोक कुमार पंकज ने आए हुए अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष दुर्गेश अग्रहरि ने किया।

कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि बालकृष्ण त्रिपाठी, अध्यक्ष सुनील कुमार, सोनू सिंह, ओमकार चौधरी पंकज पांडे इंद्र कुमार रमेश चौधरी बबलू सिंह सदरूद्दीन राजेश यादव मनीष त्रिपाठी आलोक त्रिपाठी सच्चिदानंद यादव, बृजेश कुमार अग्रहरी, दीपक श्रीवास्तव, मनोज चतुर्वेदी, कुलदीप यादव, बृजेश दुबे, घनश्याम यादव, शैलेंद्र राव, रवि पाडेय, गोरख यादव, आनंद सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

आन्दोलित किसान 23 को मनायेंगे काला दिन

नई दिल्ली (आभा)। संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) की राष्ट्रीय परिषद ने गुरुवार को एक बैठक में 22 साल के किसान शुभकरन सिंह की पुलिस से झड़प को दौरान मौत के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन का ऐलान किया है। किसान संगठन ने मांग की है कि किसान की मौत मामले में हरियाणा पुलिस और सीएम के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया जाए। उन्होंने किसान के परिवार के लिए एक करोड़ का मुआवजा और मामले में सुप्रीम कोर्ट के जज से न्यायिक जांच की मांग की है। किसानों

ने 23 फरवरी को काला दिन घोषित किया है। प्रदर्शन के दौरान देशभर में केंद्रीय गृह मंत्री, हरियाणी सीएम और हरियाणा के गृह मंत्री के पुतले फूंके जाएंगे।

संयुक्त किसान मोर्चा ने बुधवार को पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन में मारे गए 22 वर्षीय किसान शुभकरन सिंह को लेकर 23 फरवरी के दिन देश स्तर पर विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। विरोध प्रदर्शन में एसकेएम ने देश भर के किसानों से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर और हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज के पुतले जलाने को कहा है। बीकेयू (उगराहां) के अध्यक्ष जोगिंदर सिंह उगराहां ने कहा कि 23 फरवरी को काला दिन घोषित किया गया है।

सत्यपाल मलिक के 30 ठिकानों पर छापा

नई दिल्ली (आभा)। जम्मू–कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के घर सीबीआई ने सर्च की है। कीरू हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के ठेके के मामले में सीबीआई ने यह ऐक्शन लिया है। सूत्रों के हवाले से दी गई जानकारी में बताया गया है कि एजेंसी ने उनसे जुड़े कुल 30 ठिकानों पर छापेमारी की है। जानकारी के मुताबिक प्रोजेक्ट की ठेकेदारी देने में भ्रष्टाचार का आरोप

है और उसकी ही जांच के सिलसिले में सीबीआई की टीम पूर्व राज्यपाल के आवास पर पहुंची थी। सत्यपाल मलिक ने ही इस घोटाले का आरोप लगाया था। इस मामले में सीबीआई ने केस दर्ज किया था।

केस के मुताबिक करीब 2,200 करोड़ रुपये का सिविल वर्क का ठेका इस प्रोजेक्ट के लिए एक निजी कंपनी को 2019 में दिया गया था। आरोप है कि इस ठेके में घोटाला किया गया था। सीबीआई ने इस केस में दिसंबर में भी कई जगहों पर छापेमारी की थी।

दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र से भड़के लोग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जिलाधिकारी कार्यालय के पीछे डाकखाने के निकट की दीवारों पर देवी देवताओं का चित्र लगाने से लोगों का गुस्सा भड़क उठा। बुधवार को सूचना मिलने पर विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह मौके पर पहुंचे और उनके नेतृत्व में महासंघ पदाधिकारियों और स्थानीय नागरिकों ने जिला प्रशासन से मांग किया कि दीवारों पर लगे देवी देवताओं के चित्र को तत्काल प्रभाव से हटाया जाय। इसे देखते हुये प्रशासन हरकत में आ गया और वार्ता के बाद निर्णय लिया गया कि उक्त स्थान के निकट श्री हनुमान जी का मंदिर स्थापित कराया जायेगा। एडीएम, उप जिलाधिकारी सदर एवं अन्य अधिकारियों कर्मचारियों की मौजूदगी में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने फावड़े से मंदिर निर्माण का श्रीगणेश किया। जिला प्रशासन द्वारा गुरूवार से निर्माण आरम्भ करा दिया गया।

विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह और पदाधिकारी बुधवार रात्रि तक जमे रहे और भजन कीर्तन हुआ। गुरूवार से श्री हनुमान जी मंदिर निर्माण का श्री गणेश हुआ। अखिलेश सिंह ने कहा कि हिन्दू देवी

-विश्व हिन्दू महासंघ ने किया भजन कीर्तन, विरोध के बाद श्री हनुमान जी मंदिर निर्माण शुरू

देवताओं का अपमान किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जायेगा। विश्व हिन्दू महासंघ के प्रदेश मंत्री दिग्विजय सिंह राना ने कहा कि हिन्दू हितों की रक्षा के लिये महासंघ प्रतिबद्ध है और हर स्तर पर जरूरत पड़ी तो निर्णायक संघर्ष किया जायेगा। भजन कीर्तन और श्री हनुमान जी मंदिर निर्माण श्री गणेश शुरू होने तक मुख्य रूप से विश्व हिन्दू महासंघ के राजकुमार उर्फ मंटू चौधरी, अजय मिश्र, बिपिन सिंह, महेश हिन्दुस्थानी, चन्द्रेश पाठक, जगत मोहन सिंह 'विक्कू' अमरजीत सिंह, डब्लू सिंह राना, सतीश पाण्डेय, अमरजीत चौधरी, राहुल कमलापुरी, प्रदीप सोनी के साथ ही अनेक पदाधिकारी और स्थानीय नागरिक, अधिवक्ता एवं विभिन्न संगठनों के लोग उपस्थित रहे।

लोकतंत्र और संविधान बचाने के लिये आगे आयें मतदाता–राम प्रसाद चौधरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । समाजवादी पार्टी द्वारा पी.डी.ए. जन पंचायत का सिलसिला लगातार जारी है। इसी कड़ी में गुरूवार को कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र के गौर के सुजिया और हरैया विधानसभा क्षेत्र के विकमजोत के तुरसी में आयोजित कार्यक्रम में सपा नेताओं ने भाजपा पर निशाना साधा। कहा कि यह सरकार ताकत के बल पर लोकतंत्र का चीरहरण करना चाहती है किन्तु मतदाता और इण्डिया गठबंधन के कार्यकर्ता इस मंसूबे को सफल नहीं होने देंगे।

लोकसभा 61 से सपा प्रत्याशी एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री राम प्रसाद चौधरी ने कहा कि इण्डिया गठबंधन आम आदमी के अधिकारों और किसानों, नौजवानों के हितों के लिये हर स्तर पर संघर्ष करेगी। उन्होने उपस्थित लोगों का आवाहन किया कि वे लोकतंत्र और संविधान बचाने के लिये आगामी लोकसभा के चुनाव में सपा के पक्ष में मतदान करें।

सपा जिलाध्यक्ष एवं सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में मतदाता अपनी एकजुटता से भाजपा के मंसूबों को ध्वस्त कर देंगे। साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने वालों को मतदाता अपने वोट की ताकत से करारा जवाब देंगे। कहा कि भाजपा उत्पीडन, ई.डी., सीबीआई का भय दिखाकर सपा नेताओं को डराने, धमकाने की कोशिश कर रही है। मतदाता इसे बखूबी समझ रहे हैं। लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिये हमें पूरी ताकत से एकजुट होना होगा। कहा कि किसानों पर लाठी और गोलियां चलवाने वाली भाजपा की सरकार किसी की हितैषी नही है।

सपा विधायक कविन्द्र चौधरी अतुल ने कहा कि केन्द्र और उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार नौजवानों, किसानों, व्यापारियों और समाज के सभी वर्गों को धोखा दे रही है। यह जुमलों वाली सरकार है, मतदाता इससे सावधान रहे। कहा कि समाजवादी सोच से ही विकास का रास्ता निकलेगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आवाहन किया कि वे सत्ता और व्यवस्था परिवर्तन के लिये पूरी ताकत से जुट जाय। जुल्म और अत्याचार का डटकर विरोध करें।

पी.डी.ए. जन पंचायत में अनेक दलों को छोड़ लोगों ने सपा की सदस्यता ग्रहण किया। बसपा जिला महासचिव अब्दुल मलिक अपने समर्थकों के साथ सपा में शामिल हुये। पी.डी.ए. जन पंचायत में पूर्व ब्लाक प्रमुख निर्मल सिंह, मुख्य रूप से रन बहादुर यादव, अरविन्द यादव, कौशलेन्द्र सिंह 'राजू' अरविन्द सिंह, शंकर यादव, हिमांशु सिंह 'रानू', नीलू सिंह, समीर चौधरी, प्रवीण पाठक, गुलाम गौस, चन्द्र प्रकाश चौधरी, तूफानी यादव, नन्हें यादव, जिलाजीत यादव, पंकज मिश्र, शंकर यादव, दिलीप, निजामुद्दीन, मैनेजर प्रधान, अरविन्द सिंह, गुलाब चन्द्र सोनकर, मुकेश मौर्य, अब्दुल मोईन, अब्दुल मुतल्लिब, हृदयराम मौर्य, अशोक कुमार, रामकरन, दीपक पाल, सजीवन गौड़, रामा सुरेश प्रजापति, अशोक गौतम, राजेश चौहान, तिलकराम, लड्डन, सुनील शर्मा, रंगीलाल चौहान, विवेक कुमार राजभर, राम बृझारत सोनकर, सच्चिदानन्द सिंह, दिनेश वर्मा, सुरेश सिंह के साथ ही बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक, महिलायें और सपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

–सपा के पी.डी.ए. जन पंचायत में निशाने पर रही भाजपा –मतदाता भाजपा के मंसूबों को नकार देंगे– महेन्द्रनाथ यादव

जलजीवन मिशन के परियोजनाओं का होगा सत्यापन, 15 मार्च तक सड़कों का निर्माण कार्य पूर्ण करायें अधिकारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह ने पंचायतीराज, जलजीवन मिशन, पर्यटन, पशुओं का टीकाकरण के कार्यो पर असंतोष व्यक्त करते हुए सुधार करने का निर्देश दिया है। आयुक्त सभागार में आयोजित मासिक समीक्षा बैठक में उन्होने कहा कि गुणवत्तापूर्ण कार्य ना करने वाली आशाओं के विरूद्ध सीएमओ कार्यवाही करें। उन्होने कहा कि सहभागिता योजना के अन्तर्गत पशुपालको को सुपुर्दगी में दिये गये जानवर का सत्यापन करायें। उन्होने निर्देश दिया है कि आगामी लोकसभा चुनाव में मतदेय स्थल के लिए निर्धारित स्कूलो एवं पंचायत भवनों का सेक्टर मजिस्ट्रेट से सत्यापन कराते हुए इन्हें दुरूस्त करायें।

समीक्षा में उन्होने पाया कि मनरेगा में ए श्रेणी पाये जाने के बावजूद अभिलेखीकरण कार्य ठीक नही है। उन्होने पीडब्ल्यूडी तथा आरईडी को निर्देशित किया कि 15 मार्च तक सड़को का निर्माण कार्य लेपन स्तर तक पूर्ण करायें। उन्होने जलजीवन मिशन के अन्तर्गत निर्माणाधीन परियोजना का सत्यापन कराने का भी निर्देश दिया है।

पंचायती राज विभाग के कार्यो की समीक्षा करते हुए उन्होने कार्य पूर्ण ना होने तथा धनराशि व्यय ना होने की स्थिति पर असंतोष व्यक्त किया। उन्होने कहा कि ब्लाकवार ग्राम प्रधानों एवं सचिवों की प्रशिक्षण कराकर गतिरोध को दूर करायें।

समीक्षा में उन्होने पाया कि एंबुलेन्स 102 एवं 108, सामाजिक वनीकरण, अलंकार योजना, पिछड़ा वर्ग शादी अनुदान, मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, मुख्यमंत्री सुमंगला योजना, विधवा पेंशन, वृद्धा पेंशन, श्रम विभाग द्वारा कन्या विवाह योजना, एक जनपद एक उत्पाद, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना आदि योजनाओं में मण्डल के तीनों जनपद को ए श्रेणी प्राप्त हुयी है। उन्होने निर्देश दिया कि 5 मार्च तक लाभार्थीपरक योजना का लक्ष्य पूरा करें, क्योकि इसके बाद कभी भी चुनाव की आचार संहिता लग सकती है।

–मतदेय स्थल के लिए निर्धारित स्कूलो, पंचायत भवनों का सेक्टर मजिस्ट्रेट से सत्यापन करायें – मण्डलायुक्त

बैठक का संचालन संयुक्त विकास आयुक्त पदमकांत शुक्ला ने किया। इसमें जिलाधिकारी बस्ती अंद्रा वामसी, सिद्धार्थनगर के पवन अग्रवाल, सीडीओ जयेंद्र कुमार, संत कुमार, एडीएम जय प्रकाश, संयुक्त निदेशक कृषि अविनाश चंद्र तिवारी, उपनिदेशक अर्थ एवं संख्या अमजद अली अंसारी, वन संरक्षक डॉ. मनोज कुमार शुक्ला, प्रभारी अपर निदेशक स्वास्थ्य डॉ. ए.के. वर्मा, पशुपालन के डा. मेमपाल सिंह, पीडी राजेश कुमार झा, मुख्य अभियन्ता पीडब्ल्यूडी संजय कुमार श्रीवास्तव, विद्युत के एस.के. सरोज, तीनों जिलो के अधीक्षण अभियन्ता विद्युत रामदास, एस.के. पासवान, रमेश सिंह तथा विभागीय अधिकारी गण उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 23 फरवरी 2024 शुक्रवार

सम्पादकीय

चुनाव में धांधली और न्यायपालिका

चंडीगढ़ में मेयर पद के चुनाव के दौरान अनुचित तौर–तरीके अपनाए जाने के आरोपों के बाद सामने आए नतीजे के रूप में जो अलोकतांत्रिक स्थिति उपजी थी, उसे शीर्ष अदालत के निर्णय ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। अब सवाल यह है कि जब एक नगर निगम के मेयर के चुनाव में इस स्तर तक धांधली हो सकती है तो बड़े चुनावों को लेकर राजनीतिक दल किस स्तर तक तक जा सकते हैं? यहां सवाल सत्तारूढ़ राजनीतिक दल पर तो है ही, प्रश्न इस केंद्र शासित प्रदेश के उन आला अधिकारियों पर भी उठे हैं जिनकी जवाबदेही लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुचिता बनाये रखने के लिये थी। चंडीगढ़ नगर निगम का सवाल इसीलिये अधिक संवेदनशील हो जाता है, क्योंकि अन्य केंद्रशासित प्रदेशों की तरह यहां निर्वाचित जनप्रतिनिधि सभा नहीं है। इस प्रकरण से सवाल इस केंद्रशासित प्रदेश के प्रशासन में दखल रखने वाले केंद्र के बड़े अधिकारियों पर भी उठते हैं। विपक्षी दल इस दौरान चंडीगढ़ के प्रशासक और पंजाब के राज्यपाल के इस्तीफे को भी इस घटनाक्रम से उपजी प्रतिक्रिया के रूप में देखते हैं। जिसके निहितार्थ चुनाव के दौरान अपनायी गई प्रक्रिया के प्रति असंतोष के रूप में देखे गये। बहरहाल,अदालत के फैसले के बाद उन अधिकारियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए जिन्होंने सारे प्रकरण के प्रति आंखें मूंदे रखी। आखिर क्यों हमारे राजनीतिक दल भी चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता कायम नहीं रख पाते? क्यों हर मामले में कोर्ट को दखल देकर न्यायसंगत चुनाव का मार्ग प्रशस्त करना पड़ता है? यदि कोर्ट नगर निगम और पालिकाओं के छोटे मामलों में बार–बार हस्तक्षेप करने को बाध्य होगी तो क्या राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों को सुलझाने के लिये अदालत का समय प्रभावित नहीं होगा? कहीं न कहीं अदालतों में लगे वादों के अंबार के मूल में यह वजह भी है कि राजनीतिक दलों के पचड़े सुलझाने में कोर्ट का समय अनावश्यक रूप से व्यय होता है। माना जाना चाहिए कि चंडीगढ़ महापौर के मामले में दिया गया शीर्ष अदालत का फैसला भ्रष्ट राजनेताओं के लिये सबक ही नहीं, मार्गदर्शक नजीर भी साबित होगी।

बहरहाल, शीर्ष अदालत के फैसले ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व को प्राणवायु दे दी है। दिल्ली के मुख्यमंत्री व आप सुप्रीमो ने पुरानी कहावत दोहराते हुए कहा भी कि 'सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं'। अब वे सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भाजपा पर नये सिरे से हमलावर हो रहे हैं। बल्कि वे भाजपा के आगामी लोकसभा चुनाव में जीत के दावों को लेकर भी सवाल उठा रहे हैं। दरअसल, चंडीगढ़ मेयर पद पर आप व कांग्रेस के साझे प्रत्याशी की जीत को अब इंडिया गठबंधन की जीत के रूप में दर्शाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पिछले महापौर चुनाव में ऊंच–नीच हुई थी, लेकिन मामला इतनी चर्चा में नहीं आया। अब तो राष्ट्रीय स्तर पर लोकसभा चुनाव को लेकर आप व कांग्रेस के तालमेल को लेकर नये सिरे से चर्चा होने लगी है। निस्संदेह, आप व कांग्रेस खेमे में इस फैसले को लेकर उत्साह है और अपने–अपने हिसाब से इसकी व्याख्या की जा रही है। निश्चित रूप से लोकतंत्र में निर्वाचित प्रतिनिधियों को न्यायसंगत ढंग से अपने वोट का इस्तेमाल करने का अधिकार होना चाहिए। वहीं लोकतंत्र में संख्याबल का सम्मान किया जाना चाहिए। मेयर चुनाव में लोकतांत्रिक प्रक्रिया का मजाक बनाने वाले पीठासीन अधिकारी को शीर्ष अदालत की लताड़ निश्चित रूप से अन्य लोगों के लिये सबक साबित होगा। सवाल यह भी है कि पीठासीन अधिकारी ने यह कृत्य पार्टी के प्रति वफादारी जताने के लिये किया या फिर उस पर बाहरी दबाव था। निश्चित रूप से भाजपा नेतृत्व को भी हालिया घटनाक्रम से असहज स्थिति का सामना करना पड़ा है। उसकी छवि पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है। निस्संदेह, किसी लोकतंत्र की विश्वसनीयता तभी कायम रह सकती है जब चुनाव प्रक्रिया छल–बल के प्रभाव से मुक्त हो सके। हमारे तंत्र को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जनादेश का सम्मान करते हुए कोई चयन प्रक्रिया संपन्न हो। बाहरी दबाव से निर्णय बदलना लोकतंत्र का गला घोटने जैसा ही होगा।

यूपी में बदलता राजनीतिक परिदृश्य

–आशीष वशिष्ठ–

आखिरकार कांग्रेस और सपा के गठबंधन पर मुहर लग ही गई। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के समय षुरू हुई तीखी बयानबाजी और तल्ख रिशतों के बीच तमाम ऐसे मौके आए, जब लगा कि यह गठबंधन सिरे नहीं चढ़ेगा। लेकिन अंत भला तो सब भला। सीटों का बंटवार ऐसे समय हुआ है जब राहुल गांधी की भारत जोड़ों न्याय यात्रा उत्तर प्रदेष में है। ऐसे में अहम सवाल यह है कि क्या सपा कांग्रेस का गठबंधन भाजपा को चुनौती दे पाएगा? क्या कांग्रेस और सपा के साथ से उत्तर प्रदेश की राजनीतिक समीकरण और नतीजे बदलेंगे? क्या सपा कांग्रेस की दोस्ती से बसपा का नुकसान होगा? क्या सपा और कांग्रेस मिलकर भाजपा के चार सौ पार के मिशन को यूपी में रोकने में सफल होंगे?

कांग्रेस और सपा दोनों की जमीनी स्थिति ऐसी है कि मतभेद और मनभेद के बाद भी दोनों को गठबंधन करना पड़ा। दरअसल, उत्तर प्रदेश में कांग्रेस और सपा का सियासी आधार एक ही वोट बैंक पर टिका है, वो मुस्लिम मतदाता हैं। सपा इस बात को बखूबी जानती है कि अगर एक बार मुस्लिम मतदाता उसे छिटकर कांग्रेस के पाले में चला गया तो उसे दोबारा वापस लाना मुश्किल हो जाएगा। हाल में हुए चुनाव का वोटिंग पैटर्न को देखें तो मुस्लिम वोटर एक बार फिर से कांग्रेस की तरफ लौट रहा है, खासकर राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के बाद से सियासी हालात बदले हैं। ऐसे में तमाम दल जो कांग्रेस के कोर वोट बैंक पर काबिज और अपने अपने राज्य में बड़े भाई की भूमिका में हैं. ऐसे में वे कांग्रेस को दोबारा से उभरने का मौका नहीं देना चाहते हैं। सीट बंटवारे में जो देरी हुई उसकी वजह मुस्लिम बहुल सीटें ही बतायी जाती हैं। फिलवक्त सपा प्रमुख पीडीए का फार्मूला जमीन पर उतारने के लिए मेहनत कर रहे हैं।

सीट बंटवारे में कांग्रेस के हिस्से में 17 सीटें आई हैं। जबकि समाजवादी पार्टी 63 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। समाजवादी पार्टी चंद्रशेखर आजाद की 'आजाद समाज पार्टी' समेत कुछ छोटे दलों को अपने कोटे से सीट दे सकती है. यानी अखिलेश यादव और सपा को तय करना है कि गठबंधन में सपा के साथ बाकी कौन सी पार्टियां 63 सीटों पर चुनाव लड़ेंगी। यूपी में 7 साल बाद कांग्रेस और सपा दोबारा एक साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगे। दोनों दलों ने साथ मिलकर 2017 का विधानसभा चुनाव लड़ा था।

सीट बंटवारे को लेकर हुए समझौते के तहत कांग्रेस अमेठी, रायबरेली, कानपुर नगर, फतेहपुर सीकरी, बांसगांव, सहारनपुर, प्रयागराज, महराजगंज, वाराणसी, अमरोहा, झांसी, बुलंदशहर, गाजियाबाद, मथुरा, सीतापुर, बाराबंकी और देवरिया सीट पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। सपा ने कुछ सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया है। सीट बंटवारा होने के बाद वाराणसी समेत कुछ सीटों पर उम्मीदवारों के नाम वापस लिए जा सकते हैं। सपा ने वाराणसी सीट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने सुरेंद्र सिंह पटेल को उतारा है। सीट बंटवारे के बाद ये सीट कांग्रेस के कोटे में चली गई है। ऐसे में यहां से उम्मीदवार वापस लिया जाएगा।

कांग्रेस के साथ हाथ मिलाने व उसके कोटे की सीटें बढ़ाने के पीछे दो अहम फैक्टर माने जा रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि रालोद के जाने के बाद सपा के पास उसके कोटे की 7 सीटें खाली थीं। कांग्रेस को पहले ही 11 सीट का वादा किया जा चुका था। इसमें रायबरेली–अमेठी शामिल नहीं थी। इनको मिला लें तो 13 सीटों पर सपा पहले ही तैयार थी। रालोद के जाने के बाद उदारता दिखाना आसान हो गया। अंदरखाने यह भी फीडबैक था कि अल्पसंख्यक वोटरों में कांग्रेस को लेकर रुझान बेहतर हुआ है।

प्रदेश की 25 से अधिक लोकसभा सीटों पर अल्पसंख्यक वोटरों की भूमिका प्रभावी है। ऐसे में कांग्रेस के अलग लड़ने से इन वोटरों के बंटवारे का भी खतरा था, जिसका सीधा नुकसान सपा को हो सकता था। हाल में राज्यसभा के टिकट सहित अन्य मसलों को लेकर भी सपा में मुस्लिमों की भागीदारी को लेकर सवाल उठे थे। इसलिए भी सपा ने वोटरों में एकता का संदेश देने का दांव खेला है। हालांकि, सीटों के बंटवारे में उसके कोर वोटरों को किसी और के पाले में खिसकने का खतरा न हो, इस पर सपा ने खास ध्यान दिया है। कांग्रेस को मिली सीटों में अमरोहा और सहारनपुर ही ऐसी है, जहां अल्पसंख्यक वोटर चुनाव का रुख बदलने की क्षमता रखते हैं।

उत्तर प्रदेष के चुनावी मैदान में कांग्रेस भले 17 सीटों पर उतरेगी, लेकिन जानकारों का मानना है कि गठबंधन में वह अधिक फायदे में है। जो 17 सीटें उसे मिली हैं, उसमें रायबरेली ही उसके खाते में है। जबकि, अमेठी, कानपुर व फतेहपुर सीकरी में कांग्रेस दूसरे नंबर पर थी। बांसगांव में पार्टी ने प्रत्याशी ही नहीं उतारा था। बाराबंकी, प्रयागराज, वाराणसी, झांसी, गाजियाबाद में सपा दूसरे नंबर पर थी। 2019 में कांग्रेस ने 1977 के बाद का सबसे खराब प्रदर्शन किया था और उसके एक सीट मिली थी। वोट 7 प्रतिशत से भी नीचे आ गए थे।

यदि 2014 के लोकसभा चुनाव के आंकड़ों को देखें, बीजेपी ने अकेले दम पर 71 सीटों के साथ 42.63 फीसदी वोट हासिल किए थे। समाजवादी पार्टी को 22.35 फीसदी वोट और पांच सीटें मिली थीं लेकिन बीएसपी को 19.7 फीसदी वोट मिलने के बावजूद वो एक भी सीट नहीं जीत पाई। वहीं कांग्रेस महज 7.53 फीसदी मतों के बावजूद दो सीटें जीतने में कामयाब हो गई थी। 2022 के विधानसभा चुनाव में वह 2 सीट पर सिमट गई। इसके बाद भी 17 सीटें मिलना उसके लिए फायदे का सौदा है।

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने 2017 का विधानसभा चुनाव गठबंधन में लड़ा था। लेकिन इस गठबंधन का फायदा होने की जगह दोनों को इसका नुकसान हुआ। कांग्रेस की 2012 के विधानसभा चुनाव में 28 सीटें जीती थीं। गठबंधन के बाद वो 7 सीटों पर सिमट गई। सपा को 2012 के विधानसभा चुनाव में 224 सीटें मिली थीं। वह इस बार 47 सीटों पर सिमट गई। यह पहली बार थी जब सपा की सीटों का आंकड़ा सौ से नीचे चला गया। असल में, कांग्रेस और सपा ने गणित लगाया था कि वे दोनों पार्टियां साथ चुनाव लड़ेंगी तो दोनों का वोट प्रतिशत मिलकर उनकी जीत का कारण बन जाएगा। लेकिन भाजपा ने अभूतपूर्व बढ़त बनाई और पिछली विधानसभा के 15 प्रतिशत के मुकाबले 40 प्रतिशत के करीब पहुंच गई। उसे लोकसभा चुनाव में 42 प्रतिशत वोट मिले थे, विधानसभा चुनाव में उसके वोट प्रतिशत में ज्यादा गिरावट नहीं आई। कांग्रेस का पिछले विधानसभा चुनाव में वोट प्रतिशत 11.6 था जो कि 6.2 पर आ गया। सपा का वोट प्रतिशत 29.2 था जो कि 21.8 पर ठहर गया है।

उत्तर प्रदेश की राजनीति के जानकारों की माने तो समाजवादी पार्टी का साथ मिलने के चलते अधिकतर सीटों पर कांग्रेस लड़ाई में आ सकेगी। हालांकि, 2019 में सपा व और बसपा जैसे दो बड़े जातीय क्षत्रपों के साथ रहने के बाद भी भाजपा गठबंधन ने यूपी में 64 सीटें जीत ली थीं। अमेठी व कन्नौज में तो समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी ,कांग्रेस व रालोद सहित पूरा विपक्ष साथ लड़ा था, लेकिन जीत भाजपा को मिली थी।

इस बीच मिशन क्लीन स्वीप के लिए भाजपा जहां पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रभाव रखने वाले रालोद को वहीं पूर्वी उत्तर प्रदेश के दलों को भी एनडीए में शामिल करने के साथ ही प्रभावशाली नेताओं को अपने पाले में लाने में जुटी हुई है। ऐसे में यह तो साफ है कि चुनाव में त्रिकोणीय लड़ाई देखने को मिलेगी। त्रिकोणीय लड़ाई होने से एनडीए को उन सीटों पर भी फायदा होने की उम्मीद है जहां खासतौर से मुस्लिम, दलित व पिछड़ों की आबादी है। सपा–कांग्रेस और बसपा में मतदाताओं के बंटने से एनडीए की जीत की संभावना बढ़ जाएगी। इसलिए, सपा–कांग्रेस को 2024 के लोकसभा चुनाव में जीत के लिए जमीन पर और पसीना बहाना पड़ेगा।

नये सन्दर्भो में चुनाव आयोग की भूमिका

–कौशल किशोर–

चुनावी बांड के साथ चुनाव सुधार के प्रश्न पर बहस छिड़ती है। दिनेश गोस्वामी समिति की सिफारिश सुधार के बिंदुओं को उकेरती है। सत्ता पक्ष और विपक्ष की राजनीति पर हावी दोष के निवारण के लिए आज सार्थक प्रयास की जरूरत है। हैरत होती है कि सत्ता में रहते हुए राजनीतिक दल जिन नीतियों और योजनाओं को लागू करने की बात करती है, विपक्ष में होने पर उन्हीं का विरोध भी करती है। चुनाव पर आश्रित इस लोकतंत्र में चुनाव आयोग पार्ट टाइम काम करने वाली संस्था बन कर रह गई। अपराधियों व भ्रष्टाचारियों को विधान भवन से दूर रखने की राजनीति खानापूर्ति की कवायद साबित हुई है।

भारतीय संविधान के बुनियादी ढांचे पर 50 साल पहले शुरू हुई बहस एक बार फिर से हरी हो गई है। उप–राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 1973 के चच्चत केशवानंद भारती की याचिका में सुप्रीम कोर्ट के फैसले से असहमति जाहिर करते हैं। उन्होंने कहा कि संसद की शक्ति पर सवाल उठाने पर यह कहना मुश्किल होगा कि भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। उच्चतम न्यायालय ने आपातकाल में मौलिक अधिकारों पर रोक लगाने के फैसले से अपने ही सिर पर कलंक का टीका लगाया था। बीते सप्ताह चुनावी बांड को नागरिक अधिकारों का हनन मान कर असंवैधानिक करार देने के फैसले का सभी ने स्वागत किया है। साथ ही न्याय पालिका और विधान पालिका के बीच नियुक्तियों के नाम पर तकरार जारी है। आज सुधारों के पक्ष में व्यापक जन समर्थन और पारदर्शिता का अभाव दिखता है। उप–राष्ट्रपति द्वारा दिल्ली में कही बात पर चीफ जस्टिस डी. वाई. चंद्रचूड़ मुम्बई में नानी पालकीवाला स्मृति व्याख्यान में प्रतिक्रिया देते हैं। संविधान के बुनियादी ढांचे के सिद्धांत को उन्होंने ध्रुवतारा के समान करार दिया है। हैरत की बात है कि इस ध्रुवतारा की व्याख्या करते हुए उन्होंने जिन बातों का जिक्र किया उनमें से कई संसद द्वारा पारित संविधान संशोधन का ही परिणाम है।

अनुच्छेद 368 के तहत संविधान में संशोधन की शक्ति संसद में निहित है। इसका इस्तेमाल 18 जुलाई 1951 से लागू पहले संशोधन से लगातार जारी है। हालांकि स्वतंत्र भारत की पहली निर्वाचित संसद के गठन से पहले हुए इस कार्य ने लोकनीति की जगह पर सत्ता की राजनीति को पुनर्स्थापित किया है। न्यायमूर्तियों को इसकी समीक्षा करनी चाहिए कि संविधान के बुनियादी ढांचे पर इसका क्या असर पड़ा है? इस प्रश्न का उत्तर खोजते हुए आसमान में ध्रुवतारा की ओर देखने के बदले मूल संविधान की ओर देखने की जरूरत होगी। अब तक कुल 106 बार संशोधन किया गया है और भविष्य में भी यह प्रक्रिया थमने वाली नहीं है। समझौते का यह दस्तावेज परिवर्तन शून्य होने पर अप्रासंगिक ही हो जाएगा। लोकतंत्र की जननी होने का दावा करने वाले भारत की प्रतिष्ठा के अनुरूप विधियों को प्रस्तावित करना काल सापेक्ष साबित होगा।

अनुच्छेद 326 में वयस्क मतदान का जिक्र है और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 94 में गोपनीय मतदान का प्रावधान है। संविधान का 61वां संशोधन 28 मार्च 1989 को लागू किया गया था। भारतीय लोकतंत्र 4 दशकों की साधना के बाद मतदान के लिए 21 वर्ष की समय सीमा को 18 वर्ष कर देती है। जस्टिस वी.एम. तारकुंडे समिति की इस सिफारिश को समय के साथ चलने की पहल माना जाता है। 21वीं सदी इंटरनैट मीडिया का युग साबित होता है। इसमें गोपनीय मतदान की शर्त भ्रम पालने की वकालत करती प्रतीत होती है। कमजोर तबके के नागरिकों को निर्भय करने के नाम पर इसने चुनावों में धांधली का मार्ग प्रशस्त किया है। मतपत्रों पर दबंगों का दाग ई.वी. एम. को जन्म देता है। फिर वी.वी. पी.ए.टी. भी इस कड़ी में जुड़ गई। अब एक और तकनीकी अपनी जगह बनाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा रही है। इस मामले में हो रही तकनीकी की दुकानदारी के बदले निर्भयता को सुनिश्चित करने पर बल देना मुनासिब होगा। लिच्छवी गणतंत्र में भी खुले मतदान की बात मिलती है। इस दिशा में होने वाली प्रगति समय के साथ कदमताल कर सकती है। सही मायनों में भारत को लोकतंत्र की जननी के तौर पर स्थापित करने में भी मददगार होगी।

चुनावी बांड के साथ चुनाव सुधार के प्रश्न पर बहस छिड़ती है। दिनेश गोस्वामी समिति की सिफारिश सुधार के बिंदुओं को उकेरती है। सत्ता पक्ष और विपक्ष की राजनीति पर हावी दोष के निवारण के लिए आज सार्थक प्रयास की जरूरत है। हैरत होती है कि सत्ता में रहते हुए राजनीतिक दल जिन नीतियों और योजनाओं को लागू करने की बात करती है, विपक्ष में होने पर उन्हीं का विरोध भी करती है। चुनाव पर आश्रित इस लोकतंत्र में चुनाव आयोग पार्ट टाइम काम करने वाली संस्था बन कर रह गई। अपराधियों व भ्रष्टाचारियों को विधान भवन से दूर रखने की राजनीति खानापूर्ति की कवायद साबित हुई है। इस मामले में की गई कोशिशें सार्वजनिक जीवन में शुचिता और पारदध्शता सुनिश्चित करने के बदले नई राजनीतिक अर्थव्यवस्था को गढ़ती प्रतीत होती हैं। विधान भवन तक पहुंचने वाले दुष्टों को रोकने की जिम्मेदारी क्या चुनाव आयोग की नहीं होनी चाहिए? क्या इस काम में सफलता मिली है? चुनाव की प्रक्रिया में इसके लिए मौलिक परिवर्तन की जरूरत है।

चुनाव प्रचार के क्रम में झूठ, भ्रम और भय का मायाजाल पसरता जाता है। जुमलेबाजी के बूते खड़े लोकतंत्र को सत्य और धर्म के मजबूत खूंटे के बूते खड़ा करना चाहिए। चुनाव की प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन से ही ऐसा संभव हो सकेगा। मतदाताओं को इंटरनैट मीडिया पर अपनी बात रखने की छूट है। अपनी पसंद के प्रतिनिधि और राजनीतिक दल के विषय में मतदाता की बात का संज्ञान लेने हेतु चुनाव आयोग को बेहतर प्लेटफार्म विकसित करना चाहिए। केशवानंद भारती मामले में संसद की शक्तियों को बुनियादी सिद्धांत के नाम पर सीमित करने का ही प्रयास किया गया था। निर्वाचित संसद की शक्तियों को सीमित करने का यह अधिकार सुप्रीम कोर्ट को कैसे और कब मिला? आज न्यायमूर्तियों को इसका भी जवाब देना चाहिए। इसी तरह चुनावी बांड की आड़ में आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों के हनन की बात पर सत्तारूढ़ दल कटघरे में है।

संविधान के बुनियादी ढांचे का निर्गुण निराकार भाव कहने मात्र से किसी ठोस सिद्धांत का सगुण साकार रूप नहीं धारण करता है। निश्चय ही संविधान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध न्यायमूर्तियों की भावना का सम्मान करना चाहिए। ऐसे मौकों की कमी नहीं है जब न्याय पालिका ने देश को सही दिशा में बढ़ने में सहयोग किया हो। पिछले संविधान संशोधनों को कसौटी पर कसने का काम भी न्याय पालिका को करना चाहिए। आपातकाल में मौलिक अधिकारों पर रोक के निर्णय को 2017 में खारिज किया गया था। चुनावी बांड मामले में कोर्ट सरकार की त्रुटि दूर करने का मार्ग प्रशस्त करती है। संवैधानिक संस्थानों को तकरार के बदले सामंजस्य बेहतर करने की जरूरत है।

अब यादों में अमीन सायानी

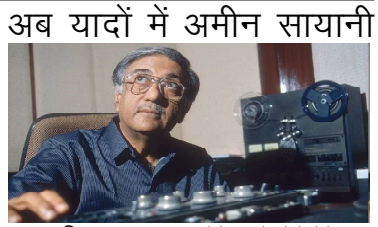

–जाहिद खान–

आखिरकार, वह आवाज खामोश हो गई, जो लाखों लोगों के दिलों पर राज करती थी। जिस आवाज से जुड़कर, मुल्क का आम आदमी भी एक अपनापन महसूस करता था। कुछ वक्त के लिए ही सही, वह अपना गम–ओ–रंज भूल जाता था। अब ये आवाज उन्हें कभी सुनाई नहीं देगी। आजादी के बाद जिन लोगों ने रेडियो को आम आदमी तक पहुंचाया, उसकी लोकप्रियता बढ़ाई, उनमें अव्वल नंबर पर अमीन सायानी का नाम था। जो अब दुनिया को सदा के लिए अलविदा कह गये। वह कुछ सालों से सेहत की परेशानियों से गुजर रहे थे। एक दौर था, जब अमीन सायानी रेडियो की आवाज थे। उसकी पहचान थे। यूं कहें कि रेडियो की आवाज के मायने अमीन सायानी थे। हफ्ते में एक बार बुधवार के दिन पूरी फैमिली साथ बैठती। रेडियो पर जैसे ही उनका सुपर हिट प्रोग्राम 'बिनाका गीतमाला' शुरू होता, तो वक्फ्त जैसे थम जाता। ऐसी मकबूलियत बहुत कम रेडियो प्रोग्राम और एनाउंसर को हासिल हुई है। अमीन सायानी के बड़े भाई हामिद सायानी रेडियो सीलोन में प्रोड्यूसर थे। उन्होंने ही अमीन सायानी का रिश्ता रेडियो से जोड़ा। हामिद सायानी के मशविरे पर अमीन सायानी ने ऑल इंडिया रेडियो में हिंदी ब्रॉडकास्टर के लिए आवेदन किया। अब इस बात पर शायद ही कोई यकीन करे कि उनकी आवाज रेडियो के लिए रिजेक्ट कर दी गई थी। इस घटना के बाद अमीन सायानी थोड़ा निराश हो गए। अपने गाइड और उस्ताद हामिद सायानी के पास पहुंचे, तो उन्होंने अमीन से रिकॉर्डिंग के दौरान रेडियो स्टेशन के हिंदी कार्यक्रम सुनने को कहा। अमीन सायानी ने ब्रॉडकास्टिंग का फन सीखने और उसे फॉलो करने में जी–जान लगा दिया।

बीसवीं सदी के पांचवें दशक में रेडियो सीलोन पर हामिद सायानी की पेशकश में अंग्रेजी गीतों का एक प्रोग्राम बहुत बढ़िया प्रदर्शन कर रहा था। इस कामयाबी से मुतास्सिर होकर एड कंपनी ऐसा ही एक प्रोग्राम हिंदी फिल्मी गीतों का भी करना चाहती थी। अपनी यह चाहत उन्होंने हामिद सायानी को बयान की। हामिद सायानी ने यह प्रोग्राम खुद न करते हुए अमीन सायानी को इसके लिए राजी कर लिया। इस तरह रेडियो पर एक शानदार प्रोग्राम के सफर का आगाज हुआ जिसका नाम 'बिनाका गीतमाला' था।

आज से सात दहाई पहले यानी 3 दिसंबर, 1952 को सात गानों की सीरीज का पहला प्रोग्राम रिले किया गया जिसे खूब पसंद किया गया। पहले ही प्रोग्राम से इसे जो कामयाबी मिली, फिर अमीन सायानी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे रातों–रात आवाज की दुनिया में स्टार बन गए। रेडियो सीलोन में पहले प्रोग्राम के बाद, 'बिनाका गीतमाला' की तारीफ में श्रोताओं के तकरीबन नौ हजार खध्त पहुंचे। यह सिलसिला आगे भी कायम रहा। एक दौर ऐसा भी आया, जब हर हफ्ते खध्त की तादाद पचास हजार तक पहुंच गई। रेडियो और आवाज की दुनिया में पहले किसी प्रोग्राम को इतनी बड़ी कामयाबी नहीं मिली थी।रेडियो सीलोन और फिर उसके बाद आकाशवाणी के विविध भारती पर प्रसारित 'बिनाका गीतमाला' की चालीस बरस से भी ज्यादा समय तक, देश में ही नहीं दुनिया के कई देशों में धूम रही। दुनिया में कोई दूसरा रेडियो या टीवी प्रोग्राम इतने लंबे वक्त और एक साथ पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, श्रीलंका और खाड़ी के मुल्कों में मकबूल नहीं रहा। इस प्रोग्राम के चाहने वाले दक्षिण एशिया, मध्यपूर्व, पूर्वी एशिया और यूरोप के कुछ मुल्कों में भी थे। आज भी रिसर्च का विषय है कि इस कामयाबी के पीछे हिंदी फिल्मी नगमों का जादू था या अमीन सायानी की चहकती आवाज, या फिर प्रोग्राम को पेश करने का उनका दिलकश अंदाज।

कार्यालय नगर पालिका परिषद, बस्ती

सार्वजनिक सूचना

एतद्द्वारा निम्न लिखित भवन संख्या के स्वामियो/क्रेतागणों तथा अन्य व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि निम्न भवनों के नाम परिवरतन की कार्यवाही नगर पालिका परिषद बस्ती में बिचाराधीन है सम्बन्धित पक्षो को धारा 147 (2) की नोटिस भेजी जा चुकी है आपत्तिकर्ता सम्पूर्ण प्रमाण सहित विज्ञापन प्रकाशित होने के दिनांक से 30 दिन के अन्दर अपना पक्ष/आपत्ति नगर पालिका परिषद बस्ती के कार्यालय में प्रस्तुत करें अन्यथा सहनियम कार्यवाही करते हुए प्रकरण निस्तारित कर दिया जायेगा।

क्र0	प्रापर्टी आई0डी0	आवेदन संख्या	वर्तमान नाम	प्रास्तावित नाम		अधार
1	2	3	4	5		6
1	0951701008033350R	PM5172324002859	गिरधर गोपाल पुत्र उमा प्रसाद	शारदा श्रीवास्तवा	गिरधर गोपाल श्रीवास्तवा	वारिस
2	0951701003019195R	PM5172324002850	श्रीमती आमिना खातून पत्नी गुलाम हुसेन	बद्री प्रसाद गुप्ता	जोखू लाल	रजि0 सेल डीड
3	0951701005022619R	PM5172324002847	डा० पी०एन०सोनी पुत्र जे०एन०सोनी	डॉ० उषा सिंह	बशराज सिंह	रजि0 सेल डीड
4	0951701001023690R	PM5172324002846	सुन्दर प्रसाद पुत्र मोती लाल	महेश प्रसाद	सुन्दर प्रसाद	वारिस
5	0951701008032102R	PM5172324002849	श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव पत्नी हरिनन्दन सहाय श्रीवास्तव, ऐश्वर्या, अपराजिता, अनुप्रिया, पुत्री गण हरिनन्दन सहाय श्रीवास्तव देवी शंकर पुत्र हरिनन्दन नावालिग संरक्षिका माता	बलराम मलहोत्रा	स्व० सुदर्शन लाल मलहोत्रा	रजि0 सेल डीड
6	0951701008031914R	PM5172324002843	श्री प्रकाश शुक्ला पुत्र राम नरायन	परमेश्वर कुमार शुक्ला	श्री प्रकाश शुक्ला	वारिस
7	0951701006037690N	PM5172324002839	श्रीमती अनीता पाल पत्नी सजय पाल व गायत्री पाल पत्नी संतोष कुमार पाल	मिराज अहमद	मो० अमीन	रजि0 सेल डीड
8	0951701008034650R	PM5172324002837	श्रीमती आरती सिंह पत्नी श्री अमर सिंह	अमर सिंह	सत्य नारायन सिंह	वारिस
9	0951701003021710R	PM5172324002836	श्यामलाल पुत्र छोटई	विश्वनाथ	राम प्रगत	रजि0 सेल डीड
10	0951701006028866R	PM5172324002835	श्री अभिषेक वर्मा पुत्र रामशंकर A (जुज भागA) व श्रीमती मालती देवी पत्नी स्व० उदयराज, श्री संतोष कुमार, श्री आशुतोष कुमार, श्री परितोष कुमार पुत्रगण स्व० उदयराज	संजू	मकरुध्वज	रजि0 सेल डीड
11	0951701008036805R	PM5172324002833	श्रीमती तारा देवी पत्नी रत्नाकर धुसिया	बिन्दू सिंह	रामकमल सिंह	रजि0 सेल डीड
12	0951701008035270R	PM5172324002834	नेपाल पुत्र गया लाल बाकेलाल पुत्र गुरुनानक प्रसाद	सुनील गुप्ता	नेपाल	वारिस
13	0951701008032154R	PM5172324002831	उर्मिला दूबे उर्फ उर्मिला देवी पत्नी बाबूराम	अशोक कुमार पाण्डेय	बाल मुकुण्ड पाण्डेय	रजि0 सेल डीड
14	0951701006023287R	PM5172324002832	श्रीमती हसनैन खातून पत्नी अब्दुल हकीम जुज भाग, श्री सदरे आलम पुत्र मोहम्मद रफी जुज भाग	मो० रफीक खान	अब्दुल हकीम	रजि0 वसीयत
15	0951701008033512R	PM5172324002829	श्रीमती मुन्नी गुप्ता पत्नी त्रिभुवन गुप्ता	अमृता गुप्ता	श्री चन्द्र	रजि0 सेल डीड
16	0951701001018787R	PM5172324002830	श्रीमती प्रेमा जायसवाल पत्नी कृष्ण कुमार जायसवाल, कृष्ण कुमार पुत्र गोबर्धन राम	मनीष कुमार जायसवाल	कृष्ण कुमार जायसवाल	वारिस
17	0951701008033228R	PM5172324002826	मनोज कुमार श्रीवास्तव, सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव, सौरभ श्रीवास्तव पुत्रगण संकटा प्रसाद श्रीवास्तव, ओम प्रकाश, जय प्रकाश लाल पुत्रगण भागवत प्रसाद	इन्दू श्रीवास्तवा	ओम प्रकाश श्रीवास्तवा	वारिस
18	0951701006029611R	PM5172324002823	श्रीमती साकिया खातून पत्नी अतहर अली मो० शकील पुत्र रोजन अली, प्रत्येक का 1/3 भाग श्री बदरुज्जमा, श्री आक्रूज्जमा, श्री अतहर अली, श्री अकबर अली, श्री असगर अली एवं श्री मेराज अहमद पुत्रगण	अकुर जायसवाल	शिवलाल जायसवाल	रजि0 सेल डीड
19	0951701008036575R	PM5172324002825	मनोज कुमार श्रीवास्तव, सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव, सौरभ श्रीवास्तव पुत्रगण संकटा प्रसाद श्रीवास्तव व ओम प्रकाश व जय प्रकाश लाल पुत्रगण भागवत प्रसाद	इन्दू श्रीवास्तव	ओम प्रकाश श्रीवास्तव	वारिस
20	0951701006035526R	PM5172324002822	श्रीमती सावित्री देवी पत्नी श्री रामदास श्रीवास्तव	लक्ष्मी शकर सहाय	राम दास श्रीवास्तव	वारिस
21	0951701006030883R	PM5172324002821	श्रीमती प्रेमा देवी पत्नी स्व० छेदीलाल	दिलशाद फातमा	मोहम्मद शोहरब खान	रजि0 सेल डीड
22	0951701002024824R	PM5172324002819	महाबीर प्रसाद पुत्र हीरालाल	बस देव	महावीर प्रसाद	वारिस
23	0951701008032141R	PM5172324002820	श्रीमती रामकली पत्नी राम जनम सिंह	शैलेश कुमार सिंह	राम जनम सिंह	वरजि0 सेल डीड
24	0951701006029611R	PM5172324002818	श्रीमती साकिया खातून पत्नी अतहर, अली मो० शकील पुत्र रोजन अली, प्रत्येक का 1/3 भाग श्री बदरुज्जमा, श्री आख्रूज्जमा, श्री अतहर अली, श्री अकबर अली, श्री असगर अली एवं श्री मेराज अहमद पुत्रगण	अकुर जायसवाल	शिवलाल जायसवाल	रजि0 सेल डीड
25	0951701006028004R	PM5172324002816	श्री अतुल श्रीवास्तव व श्री विपुल श्रीवास्तव पुत्रगण स्व० कैलाश श्रीवास्तव	जय गोपाल गुप्ता	गोविन्द प्रसाद गुप्ता	रजि0 सेल डीड
26	0951701007020962R	PM5172324002815	श्री रामधारी यादव पुत्र गोमती यादव	लालती यादव	उदय प्रताप यादव	रजि0 वसीयत
27	0951701008033164R	PM5172324002813	श्रीमती चन्द्रावती देवी पत्नी बासदेव	सतोष कुमार	वासुदेव प्रसाद कसौधन	रजि0 सेल डीड
28	0951701008032881R	PM5172324002814	श्री शकर भूज	सुह्रामा श्रीवास्तव	सुबाह्रा चन्द्र श्रीवास्तव	रजि0 सेल डीड
29	0951701002024779R	PM5172324002812	अरविन्द्र अग्रवाल पुत्र स्व० मोतीलाल	नेहा गाडिया	मयक गाड़िया	रजि0 सेल डीड
30	0951701001024683R	PM5172324002810	श्रीमती सावित्री देवी पत्नी श्याम नरायन श्याम गोबिन्द श्याम कृष्ण पुत्रगण श्याम नरायन	श्याम गोविन्द	श्याम नारायन लाल	कोर्ट आडर
31	0951701008033230R	PM5172324002806	श्रीमती रेखा मिश्रा पत्नी श्री मधुर नरायण मिश्रा	मधुर नरायन मिश्रा	राज बहादुर मिश्रा	वारिस
32	0951701005020913R	PM5172324002805	गिरजा प्रसाद पुत्र अयोध्या प्रसाद	प्रवीन कुमार पाण्डेय	राम कृष्ण पाण्डेय	वारिस
33	0951701008032953R	PM5172324002797	लाल महेश बहादुर पाल पुत्र लाल रमेश बहादुर पाल	सजय बहादुर पाल	महेश बहादुर पाल	वारिस
34	0951701006035344R	PM5172324002800	यूसूफ आजम व मोहम्मद	गुलाम रजा	युसूफ आजम	वारिस
35	0951701008032975R	PM5172324002796	पूर्णिमा पाल पत्नी लाल महेश बहादुर पाल	संजय बहादुर पाल	महेश बहादुर पाल	वारिस
36	0951701008033463R	PM5172324002784	श्री अब्दुल मजीद पुत्र फते मोहम्मद	आजाद मोहम्मद	अब्दुल मजीद	वारिस
37	0951701003036221R	PM5172324002783	राजा उर्फ राजकपूर पुत्र उमाशंकर तथा दिलीप कुमार, व विक्की पुत्र कामेश्वर प्रसाद व सत्येन्द्र कुमार विस्वास पुत्र निरंजन कुमार विस्वास, श्रीमती चन्द्रकान्ती गुप्ता पत्नी राम नेवास गुप्ता	वीना विश्वास	सत्येन्द्र नाथ विश्वास	वारिस
38	0951701004025798R	PM5172324002778	श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल, हरिश्चन्द्र चन्द्र शुक्ल श्री रमेश चन्द्र शुक्ल पुत्रगण श्री रविनाथ शुक्ल, श्रीमती पुष्पा शुक्ला पत्नी स्व० महेश चन्द्र, श्री रितेश शुक्ला, श्री राजेश कुमार शुक्ला पुत्रगण स्व० महेश चन्द्र	विमला देवी, शेष नाथ शुक्ला, विजय नाथ शुक्ला, राजेन्द्र नाथ शुक्ला	हरीश्चन्द्र शुक्ला	वारिस
39	0951701006033735R	PM5172324002776	श्री उमापति श्रीवास्तव	नन्दीश्वर दत्त ओझा	राम देव ओझा	रजि0 सेल डीड
40	0951701008035254R	PM5172324002775	श्रीमती सावित्री श्रीवास्तव पत्नी सी० के० श्रीवास्तव	प्रदीप कुमार श्रीवास्तव	चन्द्र कुमार श्रीवास्तव	रजि0 वसीयत
41	0951701008033983R	PM5172324002772	श्रीजन देवी पत्नी श्री राम	विमला	राम तोल	रजि0 वसीयत
42	0951701008031303R	PM5172324002754	राजेन्द्र प्रसाद, बालेन्द्र प्रसाद पुत्रगण राम जी पाण्डेय	देवेन्द्र कुमार पाण्डेय	राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	रजि0 सेल डीड
43	0951701008034153R	PM5172324002733	कुलदीप कुमार मिश्र, पुनीत कुमार मिश्र पुत्रगण शंखधर	कुलदीप कुमार मिश्रा	राम बिलास मिश्रा	फेमिली सेटलमेंट
44	0951701001024024R	PM5172324002729	कमल किशोर पुत्र स्व० रामगोपाल	सुमित कुमार गुप्ता शशि प्रभा गुप्ता	कमल किशोर गुप्ता	रजि0 वसीयत
45	0951701001023722R	PM5172324002731	श्री कमल किशोर पुत्र स्व० रामगोपाल	सुमित कुमार गुप्ता सशि प्रभा गुप्ता	कमल किशोर गुप्ता	रजि0 वसीयत
46	0951701001023703R	PM5172324002730	कमल किशोर पुत्र स्व० राम गोपाल	सुमित कुमार गुप्ता सशि प्रभा गुप्ता	कमल किशोर गुप्ता	रजि0 वसीयत
47	0951701007028920R	PM5172324002691	राम फेर दूबे पुत्र गंगाराम	राम मिलन दूबे उर्फ रामफेर दूबे	मोल्हू उर्फ ज्ञानदीन दूबे	रजि0 सेल डीड
48	0951701007035749R	PM5172324002680	विजय लक्ष्मी जायसवाल पुत्री स्व० मुन्नी लाल	अजीजुननिशा	शौकत अली	रजि0 सेल डीड
49	0951701004026771R	PM5172324002535	लियाकत अली, असलम अली, अकरम अली पुत्र खातिर जमा	रहीसुननिशा	मल्लू	रजि0 सेल डीड
50	51701005008306	PM517212201820	शारदा देवी पत्नी पवन कुमार तुलस्यान	माया देवी	रवि शंकर गुप्ता	रजि0 सेल डीड

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका परिषद,
बस्ती

पत्रांकः– 7355/ न0पा0प0 बस्ती/कर अनुभाग/2023–24 दिनांकः–22–02–24

2024 में हवा में उड़ जाएगा विपक्ष, यूपी की 80 सीट जीतेगी भाजपा –केशव

संवाददाता–देवरिया। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि 2024 के चुनाव में विपक्ष हवा में उड़ जाएगा। इस बार बीजेपी यूपी की 80 की 80 सीटों पर जीत दर्ज करेगी और तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बनेंगे। सपा–कांग्रेस का गठबंधन नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनने से नहीं रोक पाएगा। यह बातें उन्होंने गुरुवार को भाटपाररानी के बाबा राघव दास कृषक इंटर कॉलेज के मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कही। इसके पूर्व उन्होंने ग्राम बेलपार में नए ब्लॉक भवन का भूमि पूजन व शिलान्यास किया।

डिप्टी सीएम ने कहा कि 2014 के चुनाव में यूपी से 73 सीट बीजेपी जीती थी। लेकिन इस बार 80 की 80 लोकसभा सीटें जीतेगी। उन्होंने कहा कि सपा–बसपा कांग्रेस में भगदड़ मच चुकी है। कांग्रेस का यूपी से सफाया हो चुका है। मात्र एक सीट उनकी रायबरेली भी बच जाए वही बहुत बड़ी बात है और समाजवादी पार्टी तो समाप्तवादी पार्टी हो जाएगी। सपा का कोई सदस्य लोकसभा का मुंह तक भी नहीं देख सकेगा। डिप्टी सीएम ने कहा कि सपा–बसपा और कांग्रेस का कोई भी नेता गांव में नहीं दिखता है वह पहले ही हार मान चुके हैं।

देवरिया की भूमि देहरहवा बाबा की भूमि है 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में कलंकित ढांचा ढह गया और देवरहवा बाबा के आशीर्वाद से 500 साल बाद अयोध्या की भूमि पर श्री राम लाला का भव्य मंदिर भी बनकर तैयार हो रहा है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार है, यहां मोदी जी की गारंटी चलती है। उन्होंने कहा कि 2014, 2017, 2019 और 2022 में जनता ने आशीर्वाद दिया था जिसके बदौलत 500 साल बाद रामलाल अपने जन्म स्थान पर विराजमान हो चुके हैं। इस बार हर बूथ पर 500 कमल खिलाने का आवाहन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के शिखर पर पहुंच चुका है।

केशव ने कहा कि राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रधानमंत्री ने कहा है कि जनता से 100 दिन के अंदर चुनाव हो जाएंगे यह 100 दिन उन्होंने मांगे है। सौ दिन के बदौलत देश सौ साल आगे जाएगा। अभी पांचवी अर्थव्यवस्था है लेकिन 5 साल बाद भारत दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था का रूप लेगा। पीएम नरेंद्र मोदी की दुनिया के शक्तिशाली नेताओं में गिनती हो रही है। पाकिस्तान थर थर कांप रहा है। दुनिया भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। सपा–कांग्रेस गठबंधन नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनने से नहीं रोक पाएगी। राहुल गांधी प्रदेश की युवाओं को कहते हैं कि वह नशा में रहते है लेकिन 2019 में अमेठी में युवाओं ने राहुल की नशा उतार दी है। उन्होंने कहा कि सपा, बसपा, कांग्रेस हताश है। आने वाले लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी तीसरी बार पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाएगी।

छह वर्षीय मासूम की हत्या कर गन्ने में फेंका शव, दुष्कर्म की आशंका, संदेह के आधार पर एक गिरफ्तार

संवाददाता–बहराइच। जिले के कैसरगंज कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी छह वर्षीय बालिका बुधवार की रात घर से लापता हो गई थी जिसका शव बृहस्पतिवार की सुबह गन्ने के खेत में पड़ा मिला। बालिका के साथ दुष्कर्म की आशंका जताई जा रही है। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई में जुट गई है। कैसरगंज कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी छह वर्षीय मासूम बालिका बुधवार की रात घर से अचानक गायब हो गई थी जिसके बाद परिजनों ने आसपास खोजबीन की और इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर बालिका की तलाश शुरू की थी। इस दौरान बृहस्पतिवार की सुबह बालिका का शव गन्ने के खेत में पड़ा मिला। शव मिलने से परिजनों में कोहराम मच गया। मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एएसपी नगर रामानंद कुशवाहा ने बताया कि परिजनों ने गांव निवासी एक युवक पर संदेह जताया था। युवक के घर बच्चे खेलने के लिए जाया करते थे। संदेह के आधार पर उसे पकड़ कर पूछताछ की गई। वहीं दूसरा व्यक्ति गायब रहा। पकड़े गए युवक की निशानदेही पर गन्ने के खेत से शव बरामद किया गया। आरोपी राजेश उर्फ लाला को गिरफ्तार कर लिया है और कल्लू की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

दूसरे के स्थान पर हाईस्कूल की परीक्षा दे रहे चार युवक और सरगना गिरफ्तार

संवाददाता–देवरिया। जिले के मझौलीराज स्थित बलभद्र नारायण इंटर कॉलेज में दूसरे के नाम पर परीक्षा दे रहे चार युवकों को आंतरिक उड़ाकादल ने दबोच लिया। पकड़े गए युवको के बयान पर मझौली राज के किला चौराहे से सरगना बबलू को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पांचो युवक लखीमपुर खीरी पीलीभीत व शाहजहांपुर के बताए जा रहे हैं। पुलिस सभी से पूछताछ कर रही है। गुरुवार की सुबह 180 केंद्रों पर यूपी बोर्ड की परीक्षा शुरू हुई। पहली पारी में हाई स्कूल की हिंदी पेपर की परीक्षा हो रही थी। सलेमपुर कोतवाली क्षेत्र के मझौलीराज स्थित बलभद्र नारायण इंटर कॉलेज में छात्र परीक्षा दे रहे थे। विद्यालय के आंतरिक उड़ाकादल कक्षा में छात्रों की चेकिंग कर रहा था। दल के सदस्य छात्रों के आधार कार्ड की परिचय पत्र की मिलान कर रहे थे। इसी बीच चार छात्रों के आधार कार्ड दूसरे जिले होने पर कुछ शक हुआ। टीम के सदस्यों ने इसकी गहनता से जांच किया तो चारों युवक फर्जी आधार कार्ड बनाकर दूसरे के नाम पर परीक्षा देते मिले। टीम ने चारों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो पता चला कि चारों को दूसरे के नाम पर परीक्षा देने के लिए लखीमपुर खीरी का रहने वाला बबलू उर्फ दर्शन सिंह पुत्र जीत सिंह लाया हुआ था। वह मझौलीराज कस्बे के किला चौराहे पर है। युवकों के निशानदेही पर मझौली राज के किले चौराहा से सरगना बबलू दर्शन सिंह को पुलिस ने दबोच लिया। पुलिस पांचो को सलेमपुर कोतवाली ले गई ,जहां उनसे पूछताछ की जा रही है। केंद्र व्यवस्थापक के अनुसार धर्मेंद्र कुमार पुत्र अर्जुन प्रसाद लखीमपुर खीरी के स्थान पर रोशनलाल पुत्र विदेशी निवासी मुरार लखीमपुर खीरी परीक्षा दे रहा था। गुरेन्द्र पाल सिंह पुत्र जसवंत सिंह निवासी पीलीभीत के स्थान पर अजय पुत्र रमाशंकर निवासी पीलीभीत, मनवीर सिंह पुत्र हरविंदर सिंह पीलीभीत के स्थान पर संदीप कुमार सिंह पुत्र राम अवतार सिंह निवासी कबीरगंज पीलीभीत और ऋतुराज त्रिपाठी पुत्र अश्वनी त्रिपाठी निवासी शाहजहांपुर के स्थान पर एक दूसरा व्यक्ति परीक्षा दे रहा था। केंद्र व्यवस्थापक ने सभी के विरुद्ध सलेमपुर कोतवाली में तहरीर दिया है।

डबल इंजन की सरकार का लक्ष्य विकसित भारत- योगी आदित्यनाथ

संवाददाता–गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार का लक्ष्य विकसित भारत बनाने का है। विकसित भारत के इस संकल्प को पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश को विकसित बनाना होगा और उत्तर प्रदेश को विकसित बनाने के लिए गोरखपुर को विकसित करना होगा। विकसित देश, प्रदेश और जनपद के इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए औद्योगिक निवेश भी आवश्यक है। अच्छी सरकार और बेहतर कानून व्यवस्था से ही प्रदेश में औद्योगिक विकास दिख रहा है। सीएम योगी गुरुवार को गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) क्षेत्र को 1040 करोड़ रुपये की 20 परियोजनाओं की सौगात देने के बाद गीडा के सेक्टर 13 में आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर उन्होंने गीडा की 650 करोड़ रुपये की अनुमानित आय वाली कालेसर आवासीय टाउनशिप योजना को लांच करने के साथ 300 करोड़ रुपये के निवेश वाली एसडी इंटरनेशनल की प्लास्टिक रिसाइक्लिंग एवं फूड पैकेजिंग कंटेनर यूनिट का शिलान्यास तथा 90 करोड़ रुपये के 18 विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास किया। सीएम ने राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (नाइलिट) के स्किल ट्रेनिंग सेंटर के पांच छात्रों को नामांकन प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि औद्योगिक विकास और रोजगार के क्षेत्र में जो परिणाम दिख रहा है, वह बेहतर कानून व्यवस्था, अच्छी सरकार और अच्छे जनप्रतिनिधियों के चुने जाने का परिणाम है। जब नीयत अच्छी होती है तो परिणाम भी अच्छे आते हैं। सीएम योगी ने कहा कि आज गीडा नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यहां गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे का काम जल्द ही पूरा हो जाएगा। तब लखनऊ जाने के लिए दो रूट हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र औद्योगिक क्लस्टर के रूप में विकसित हो, इसके लिए बीते कुछ वर्षों में तमाम प्रयास हुए हैं। गीडा में वरुण ब्रेवरेज, केयान डिस्टलरीज, सीपी मिल्क, तत्वा प्लास्टिक, सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन, इंडिया ऑटोव्हील्स, बालाजी प्रोसेसर्स, रुंगटा इंडस्ट्रीज, कपिला कृषि उद्योग, सिंह पेपर प्रोजेक्ट के निवेश का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सिर्फ इन्हीं निवेश परियोजनाओं से करीब 5000 युवाओं को यही नौकरी व रोजगार उपलब्ध होगा।

सीएम ने कहा कि गीडा क्षेत्र में ढेर सारे अन्य उद्योग लग रहे हैं। यहां 25 एकड़ में गारमेंट पार्क, 88 एकड़ में प्लास्टिक पार्क विकसित हो रहा है तो 34 करोड़ रुपये की लागत से फ्लैटेड फैक्ट्री भी बन रही है। इसके अलावा सरकार 5500 एकड़ में धुरियापार मेंऔद्योगिक टाउनशिप बनाने जा रही है। उन्होंने बताया कि हाल में ही नई सीमेंट फैक्ट्री के लिए प्रस्ताव मिला है। इसके लिए निवेशक को भूमि दिखा दी गई है।

सीएम योगी ने कहा कि वर्ष 2014 के प्रधानमंत्री बनने के साथ ही मोदी जी ने हर जरूरतमंद व्यक्ति के लिए आवास की घोषणा की थी। देश में अब तक चार करोड़ गरीबों को सिर ढकने के लिए पक्के छत की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है। उत्तर प्रदेश में 56 लाख गरीबों को मकान दिए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि अपना पैसा देकर जो लोग आवास पाने के इच्छुक हैं, उनके लिए गोरखपुर विकास प्राधिकरण के साथ ही गीडा ने भी आगे कदम बढ़ाए हैं। उन्होंने बताया कि गीडा की कालेसर आवासीय परियोजना में हर श्रेणी के लोगों के लिए भूखंड उपलब्ध हो सकेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि किसी भी उत्पाद की गुणवत्ता के साथ उसकी पैकेजिंग का अपना महत्व है। कोई उत्पाद कितना भी अच्छा हो, अगर उसका बाहरी आवरण ठीक नहीं है तो वह बाजार की प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाएगा। किसी उपभोक्ता की पहली नजर उत्पाद के पैकेज पर पड़ती है। अगर उत्पाद सजा हुआ है तो लोग उसे देखते हैं। उत्पाद की कीमत बढ़ाने के साथ बड़ा बाजार उपलब्ध कराने में भी पैकेजिंग महत्वपूर्ण है। उन्होंने पैकेजिंग के क्षेत्र में नई यूनिट डालने के लिए एसडी इंटरनेशनल के निदेशकों को साधुवाद दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोरखपुर एक नया गोरखपुर बन रहा है। कालेसर से जंगल कौड़िया बाईपास पहले सपना था, आज हकीकत है। गोरखपुर में एम्स बन चुका है, बीआरडी मेडिकल कॉलेज का उन्नयन हो चुका है। खाद कारखाना शुरू हो चुका है। गोरखपुर में चार–चार विश्वविद्यालय स्थापित हैं। अभी गत दिनों गोरखपुर के लिए सरकार ने पशु चिकित्सा महाविद्यालय के स्वीकृति दे दी है। इसे बाद में विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित किया जाएगा। इसके लिए कैबिनेट से बजट की मंजूरी भी हो गई है। सहजनवा में अटल आवासीय विद्यालय तो हरपुर में सर्वोदय विद्यालय बन चुका है। उन्होंने कहा कि हर एक क्षेत्र में कुछ न कुछ नया हुआ है और इस नएपन के लिए हमें खुद को तैयार करना होगा। समारोह को सहजनवा के विधायक प्रदीप शुक्ल ने भी संबोधित किया और सहजनवा व गीडा क्षेत्र में हुई प्रगति का विस्तार से उल्लेख किया।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री का स्वागत एसडी इंटरनेशनल के एमडी विनय अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक प्रदीप शुक्ल, विपिन सिंह, फतेह बहादुर सिंह, श्रीराम चौहान महेंद्रपाल सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, भाजपा के जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, वरिष्ठ नेता रमेश सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सीएम योगी ने कहा कि प्रतिभाशाली युवाओं के स्केल को स्किल में बदलने का काम गीडा में स्थापित नाइलिट के स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग सेंटर से हो रहा है। पहले युवा नौकरी के लिए भटकते थे, अब यही ट्रेनिंग लेकर नौकरी हासिल कर लेंगे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परंपरागत कोर्स के साथ ही स्किल डेवलपमेंट का प्रावधान भी किया गया है। एक युवा पढ़ाई पूरी कर जब बाहर निकलेगा तो नौकरी उसके इंतजार में होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक तरफ विकास हो रहा है तो दूसरी तरफ आस्था का सम्मान भी हो रहा है। सदियों की प्रतीक्षा के बाद श्रीअयोध्याधाम में भगवान श्रीरामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हो चुके हैं। उन्होंने सभी लोगों से आग्रह किया कि वे श्रीअयोध्याधाम में प्रभु श्रीरामलला के दर्शन करने अवश्य जाएं।

गीडा के सेक्टर 13 में सीएम योगी ने जिस एसडी इंटरनेशनल की यूनिट का शिलान्यास किया, उसके बन जाने के बाद करीब साढ़े सात सौ लोगों को रोजगार मिलेगा। 42284 वर्गमीटर में बनने वाली इस प्लास्टिक रिसाइक्लिंग प्लांट एवं फूड पैकेजिंग कंटेनर यूनिट के लिए एसडी इंटरनेशनल की तरफ से 300 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। इस यूनिट में तीन मेगावाट का सोलर प्लांट भी लगेगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हाथों लांच हुई गीडा की कालेसर आवासीय टाउनशिप 120 एकड़ में विकसित होगी। इस आवासीय परियोजना में निम्न, मध्यम व उच्च आयवर्ग के लोगों की जरूरत के अनुसार छोटे, मध्यम और बड़े आकार के भूखंड उपलब्ध होंगे।

मुख्यमंत्री के हाथों गीडा के सेक्टर 27, 28 व सेक्टर 11 को 90 करोड़ रुपये के 18 विकास कार्यों का उपहार मिला। सेक्टर 27 व 28 को मिलाकर 35 करोड़ रुपये से अधिक के नौ कार्यों का शिलान्यास हुआ।

भगवान भक्त के अभिमान को समाप्त कर देते हैं

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

मुण्डेरवा (बस्ती)। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम दीक्षापार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के छठ्ठम दिवस पर रासलीला करते समय गोपियों को अभिमान हो गया कि श्री कृष्णा हम पर अधीन है, मोहित हैं, भगवान उसी समय उनके बीच से अंतर ध्यान हो गए तब गोपियों का अभिमान चूर हुआ एवं उन्होंने प्रभु को पुकार लगाई ।भगवान पुनरूउनके बीच प्रकट हो गए। उक्त विचार उज्जैन महाकाल से पधारे महामृत्युंजय पीठाधीश्वर स्वामी प्रणव पुरी जी महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किया।

महाराज जी ने कहा कि मन में विकार है तो प्रभु नहीं रह सकते भगवान ने सुदर्शन का उद्धार करके संदेश दिया कि सभी जीव परमात्मा की सुंदर कृति हैं ।हमें किसी के दिखाने के कारण उसका उपहास नहीं उड़ाना चाहिए। महाराज जी ने कथा को आगे बढ़ाते हुए आज कंस वध का प्रसंग सुनाया। कंस का उद्धार भी आवश्यक था वह भगवान को जन्म लेने से पहले ही नित्य ध्यान करता रहता था चाहे बैर भाव से ही क्यों ना हो कंस वध के पश्चात समस्त मथुरा में हर्षोल्लास फैल गया अर्थात जब दुष्ट संसार से जाता है तो समाज को प्रसन्नता होती है । महाराज जी ने कहा कि सज्जन के जाने पर सभी दुखी होते हैं हमें अपने जीवन में वह कार्य करना चाहिए जिससे हमारे जाने पर लोग हमें स्मरण करके हमारी कमी का अनुभव करें। महाराज जी ने कहा कि भगवान श्री कृष्णा जी ने 64 दिन रात में अपनी शिक्षा पूर्ण की ।महाराज जी ने कहा कि उज्जैन अवातिका पुरी में गुरु सांदीपनी के आश्रम पर प्रभु की शिक्षा हुई। स्वामी जी ने उज्जैन की महिमा बताते हुए कहा जहां ज्योतिर्लिंग सन्ग शक्तिपीठ तो है ही साथ साथ में नारायण की लीला भी वहां हुई । उधो गोपी संवाद से भगवान ने प्रेम ही सर्वोपरि है ।प्रभु को प्रसन्न करने के लिए ऐसा उपदेश सारे जगत को दिया ।मुख्य यजमान के रूप में रूप में कैप्टन रमाकांत शुक्ल, श्रीमती चंद्रवती देवी, तथा परिवर के अन्य सदस्यों के साथ प्रवचन के समय उमाकांत शुक्ल, शशिकांत शुक्ल, अमित शुक्ल, राम अवध पांडेय, शुक्ल, त्रिपुरारी पांडेय,राम अवध पांडे, रामचंद्र शुक्ल, चिंता हरण शुक्ल, मोहन शुक्ल मेवालाल शुक्ल, सहित तमाम महिला व पुरुष उपस्थित रहे। कथा के मुख्य आयोजक उमाकांत शुक्ल ने समस्त क्षेत्र वासियों से कथा श्रवण करने की अपील किया है।

अधूरे प्रश्न ने बढ़ाई विद्यार्थियों की उलझन

संवाददाता–गोरखपुर। यूपी बोर्ड 10वीं की परीक्षा का पहला पेपर हिंदी को देकर निकले छात्रों के चेहरे पर सुकून देखी गई, हालांकि गद्यांश आधारित अधूरे प्रश्न ने अभ्यर्थियों की उलझन बढ़ाई। गद्यांश में रेखांकित अंश की व्याख्या करने के लिए कहा गया, लेकिन गद्यांश को रेखांकित ही नहीं किया गया था। जिस वजह से उस प्रश्न को छोड़कर अभ्यर्थियों ने विकल्प में दिए दूसरे प्रश्न को हल किया। वहीं अधिकतर छात्रों ने पूरे गद्यांश की ही व्याख्या कर दी जिससे उन्हें काफी समय लगा।

परीक्षा सुबह 8:30 बजे शुरू हुई 11:45 पर समाप्त हुई। हाथों में प्रश्न पत्र लेकर निकले अभ्यर्थी दिव्यांश कुमार ने बताया कि प्रश्न सरल आए थे। हालांकि वैकल्पिक खंड में कुछ प्रश्न बाहर से भी आए थे। व्याकरण की पूरी तैयारी किया था, लेकिन एक भी प्रश्न व्याकरण से नहीं पूछे गए थे। अभ्यर्थी आर्यन ने बताया कि प्रश्न आसान लेकिन बहुत लंबे थे। जिससे हल करने में समय लगा। केंद्र से बाहर निकले अधिकतर छात्रों के चेहरे पर खुशी की झलक देखी गई। छात्रों ने प्रश्न पत्र को अच्छे तरीके से हल करने की खुशी जाहिर की।

जीप व ट्रक की टक्कर में दो युवकों की मौत, परिवार में मचा कोहराम

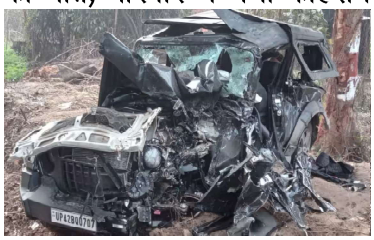

संवाददाता–अयोध्या। जिले में सड़क हादसा हो गया। अयोध्या–प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग पर परोमा गांव के निकट ट्रक और थार जीप दोनों गाड़ियों में आमने–सामने जबरदस्त टक्कर हो जाने से घटनास्थल पर ही दो लोगों की मौत हो गई। इस दौरान घटना की जानकारी मिलते ही कोतवाल लालचंद सरोज एवं चौकी इंचार्ज अपनी पुलिस टीम के साथ स्थल पर पहुंचकर लाश को कब्जे में ले लिया।

कोतवाल लालचंद सरोज ने गुरुवार को बताया कि जनपद वाराणसी से अयोध्या शहर थार चालक जनपद कानपुर नगर, नगर निगम निवासी 36 वर्षीय प्रदीप कुमार पुत्र मनोज कुमार व 28 वर्षीय अग्निवेश सिंह पुत्र तेज बहादुर सिंह निवासी रमाकांतनगर पिशाच मोचन वाराणसी से अयोध्या लक्ष्मण पुरी कॉलोनी अमानीगंज अपने निज आवास पर चालक के साथ वापस घर आ रहे थे कि रात 12:15 बजे परोमा गांव के निकट हाइवे पर अयोध्या से सुल्तानपुर की तरफ जा रही तेज रफ्तार ट्रक यूपी 43 एटी 4548 सामने से थार जीप यूपी 42 बीक्यू 0707 से जा टकराई। इस दौरान थार जीप चकनाचूर हो गई और ट्रक ड्राइवर खलासी सहित गाड़ी छोड़कर फरार हो गए। टक्कर के बाद दोनों गाड़ियां गड्ढे में चली गई। इस बड़ी घटना से परिजनों और रिश्तेदारों में कोहराम मच गया है। पुलिस ने दोनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भिजवाए।

मीडिया, महिला अधिकारों, समानता पर संगोष्ठी में विमर्श

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह के अंतर्गत चलाये जा रहे जागरूकता अभियान के तहत महिलाओं से संबंधित मुद्दों और मीडिया में महिलाओं के चित्रण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए 'मीडिया कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण और संवेदीकरण कार्यक्रम' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन विश्व युवक केंद्र नई दिल्ली और युवा विकास समिति के तत्वाधान में प्रेस क्लब बस्ती में किया गया।

विधि विशेषज्ञ राम मूर्ति मिश्र ने मीडिया में महिलाओं के गुणात्मक प्रगति, रिपोर्टिंग के प्रति अधिक संवेदनशील दृष्टिकोण तथा इस क्षेत्र में पुरुषों एवं महिलाओं के समान प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने रिपोर्टिंग करते समय महिला पत्रकारों के सामने आने वाली चुनौतियों और मीडिया घरानों में प्रबंधकीय पदों को संभालने के लिए और अधिक महिलाओं की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. नवीन सिंह ने कहा कि मीडिया में महिलाओं की सराहना करते हुए कहा कि समाज की नकारात्मक मानसिकता के बावजूद देश की महिलाएं न केवल पत्रकारिता में बल्कि हर क्षेत्र में ऊंचाइयों पर पहुंच गई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि समाज की मानसिकता बदलने की जरूरत है और मीडिया इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि लैंगिक समानता को मीडिया प्रमुखता से आगे बढ़ाएगा तो निश्चित रूप से समाज में परिवर्तन होगा और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना सुनिश्चित होगी। उन्होंने कहा कि समाज को दिशा देने में मीडिया सशक्त है। लैंगिक समानता को स्थापित करने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

कार्यशाला को तीन तकनीकी सत्रों में विभाजित किया गया थाय श्मीडिया संचालन और सामग्री में मीडिया के लिए लिंग–संवेदनशील संकेतक', 'महिला मीडिया पेशेवरों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां' और ' महिलाओं के सशक्तिकरण में मीडिया की भूमिका' । कार्यशाला का उद्देश्य मीडिया हितधारकों को महिलाओं से संबंधित समस्याओं के समाधान तथा महिला सशक्तिकरण एवं नेतृत्व की कहानियों के लिए और अधिक मंच समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करना और महिलाओं के अधिकारों के बारे में जनता को सूचित करना और इस तरह के अधिकारों का उल्लंघन होने की स्थिति में उनके उपलब्ध साधनों के बारे में जानकारी देना है। बृहस्पति कुमार पाण्डेय ने कहा की समाज में लैंगिक असमानता को दूर करने का प्रयास करना जरुरी है। मीडिया महिला अधिकारों, महिला समानता, महिलाओं के मुद्दें समाज के सामने आसानी से रख सकती है। उन्होंने बताया कि परंपरागत और न्यू मीडिया दोनों माध्यमों में ही महिलाओं से जुड़े पक्षों को उजागर करना जरुरी है। इस विषय पर पत्रकारों का समाज से निरंतर संपर्क रहता है, ऐसे में बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को "लैंगिक संवेदनशील" बनाने में उनकी भूमिका बढ़ाई जा सकती है। ट्रेनिंग कार्यशाला में महिलाओं से जुड़े कानूनों सहित घरेलू हिंसा अधिनियम, यौन अपराध से बच्चों का संरक्षण अधिनियम पर पीपीटी के जरिये जानकारियां दी गई।

इस मौके पर अरुण कुमार, रजनीश त्रिपाठी,देवेन्द्र पाण्डेय,राकेश चन्द्र बिन्नू, राकेश गिरि, श्री प्रकाश श्रीवास्तव, अरुण मिश्र, राजेश पाण्डेय, सुनील मिश्र, राहुल सिंह, संदीप यादव, लालू प्रसाद,अखिलेश चन्द्र श्रीवास्तव, सतेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, संतोष श्रीवास्तव, कलीम फारुखी, विन्देश्वरी लाल श्रीवास्तव, विशाल पाण्डेय, रत्नेश्वर मिश्र,अभिषेक गौतम, मेराज आलम, राहुल पटेल,परवेज आलम, तबरेज आलम, अनूप बरनवाल, मो. आलम, विनोद कुमार, शकील खान, कर्मचन्द्र यादव, विजय मिश्र, अफजाल कुरैशी, दिलीप कुमार, व्यास मणि, सहित अनेकों लोग मौजूद रहे।

स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर वैदिक ज्ञान का प्रसार किया - ओम प्रकाश आर्य

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । स्वामी दयानन्द विद्यालय सुरतीहट्टा बस्ती में वैदिक यज्ञ कर महान क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक ओम प्रकाश आर्य ने बताया कि देश और दुनिया में वैदिक ज्ञान के प्रसार के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की।

वे भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त सन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय सहित अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और हिन्दू समाज व भारत को संगठित करने तथा 1920 के दशक में शुद्धि आन्दोलन चलाने में महती भूमिका अदा की। डॉ भीमराव आम्बेडकर ने सन १९२२ में कहा था कि श्रद्धानन्द अछूतों के 'महानतम और सबसे सच्चे हितैषी' हैं। आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश से पधारे दिनेश आर्य ने यज्ञ में आहुतियां दिलाते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद , ये नाम सामने आते ही मस्तिष्क में ऊंचा कद, चेहरे पर गंभीरता, वाणी में दृढ़ता लिए एक महामानव का नाम स्मरण हो जाता हैं ।

स्वामी श्रद्धानंद को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कर–कमलों से गढ़ा और राष्ट्र–सेवा के लिए प्रेरित किया। प्रधानाध्यापक आदित्यनारायण गिरी ने अफसोस जताते हुए कहा कि जिस स्वामी श्रद्धानंद ने 20 लाख से अधिक लोगों को दोबारा हिन्दू बनाया उन्हें ज्यादातर लोग जानते तक नहीं है. यह हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि जिस विराट व्यक्तित्व को यह सौभाग्य प्राप्त है की उन्होंने जामा मस्जिद से वेद मन्त्रों का पाठ किया। जन्मोत्सव सभा में विद्यालय के समस्त छात्र छात्राओं एवं शिक्षक शिक्षिकाओं ने अपने अपने विचार रखे।

दो दिवसीय वार्षिक क्रीडा समारोह शुरू

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। गुरुवार को राजकीय महाविद्यालय रुधौली में दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य एवं मुख्य अतिथि डा0 नसीर हसन द्वारा माँ सरस्वती के फोटो पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित करके किया गया।

कार्यक्रम में 100 मी0 दौड़, 200 मी दौड़, ऊंची कूद, लम्बी कूद, भाला प्रक्षेप एवं चक्र प्रक्षेप प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 100 मी० दौड़ मे छात्र वर्ग मे स्वतन्त्र बहादुर प्रथम, किशन लाल गुप्ता द्वितीय, कृष्ण वर्मा तृतीय एवं छात्राओं में रीमा गौड़ प्रथम, मेनिका चौधरी द्वितीय एवं चादनी मौर्या तृतीय, 200 मी० दौड़ में स्वतन्त्र बहादुर प्रथम, कृष्ण वर्मा द्वितीय, बदूद आलम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्रा वर्ग में रीना प्रथम, शेषकली द्वितीय एवं रिशु ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लम्बी कूद में स्वतन्त्र बहादुर प्रथम, कृष्ण वर्मा द्वितीय, किशन लाल गुप्ता तृतीय, छात्रा वर्ग मे शेषकली प्रथम, चांदनी मौर्या द्वितीय, अंजनी चौधरी तृतीय स्थान, ऊँची कूद में छात्र वर्ग में कृष्ण वर्मा प्रथम, किशन लाल गुप्ता द्वितीय एवं भानू प्रताप तृतीय, छात्रा वर्ग में शशिकला प्रथम, अजनी चौधरी द्वितीय रीमा गौड ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य ने सभी को शुभकामनाएं दी।

छत की कुंडी में लटका मिला युवक का शव

संवाददाता–गोरखपुर। सहजनवा नगर पंचायत के लुघई वार्ड 10 में गुरुवार को संदिग्ध हाल में छत की कुंडी से लटकता हुआ युवक का शव मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

सहजनवा थाना क्षेत्र के वार्ड 10 लुघई निवासी आकाश (23) पुत्र संजय दो भाई हैं। छोटा भाई शहर में अपने मौसी के घर रह कर पढ़ाई करता है। मां–बाप की पहले ही मौत हो चुकी है। लोगों ने बताया कि पेंट–पॉलिश करने वाला आकाश नशे का आदी था। घर में अकेले रहता था। गुरुवार को दिन में कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। उसकी चाची कमरे में गईं तो देखा कि आकाश छत की कुंडी से बंधे फंदे से लटक रहा था।

सूचना पर सीओ गीडा अनुराग सिंह, एसओ मदन मोहन मिश्र हमराहियो के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सीओ गीडा अनुराग सिंह ने कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

परीक्षा देने जा रहे छात्र की सड़क हादसे मे मौत

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। बासी कोतवाली क्षेत्र के सोनखर ढाबा के पास खड़े ट्रक से गुरुवार की सुबह परीक्षा देने जा रहे छात्रों की बाइक टकरा गई। इसमें बाइक सवार एक छात्र की मौत हो गई, जबकि दो घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को पीएचसी बांसी में भर्ती कराया, जबकि शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बांसी क्षेत्र के कोड़सी गांव निवासी रवि किशन पुत्र वीरेंद्र कुमार, बभनीताल निवासी राज शर्मा पुत्र उमेश व सोनखर गांव निवासी गणेश साहनी (17) पुत्र अवधेश तीनों हाईस्कूल की परीक्षा देने के लिए गुरुवार की सुबह एक ही बाइक से बांसी जा रहे थे। जैसे ही वे लोग बाइक से सोनखर ढाबा के पास पहुंचे। वहां पहले से ही खड़े एक ट्रक से टकरा गए। टकराने का कारण कोहरा बताया जाता है। टकराने के बाद तीनों सड़क पर गिरकर घायल हो गए। आसपास के लोगों ने हादसे की सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बांसी ले गई, जहां डॉक्टरों ने गणेश साहनी को मृत घोषित कर दिया।

राम मंदिर उद्घाटन का पूरा हुआ 1 महीना, 62 लाख श्रद्धालुओं ने किए दर्शन

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या के राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को एक महीने हो गए हैं। दशकों तक टेंट में रहे रामलला पिछले महीने 22 जनवरी को ही अपने भव्य गर्भगृह में विराजमान हुए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों से रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। इसके बाद से राम मंदिर को आम नागरिकों के लिए खोल दिया गया। इस दिन से रामलला की दर्शन के लिए लाखों श्रद्धालुओं अयोध्या पहुंच रहे हैं। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के एक महीने बाद भी रामभक्तों का उत्साह उफान पर है। रामलला के दर्शन करने वाले रामभक्तों का अब भी ताता लगा रहता है। हर दिन में लाखों श्रद्धालु अपने भगवान रामलला का दर्शन कर रहे हैं। अयोध्या में अब भी दिन तरह से रामभक्तों की भीड़ उमड़ रही है, उससे यह साबित होता है कि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के एक महीने बाद भी 'दर्शन' के लिए उत्साह बरकरार है। रामलला हर दिन रिकॉर्ड तोड़ और नए रिकॉर्ड स्थापित कर रहे हैं। राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद देश– विदेश के कोने– कोने से श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। एक महीने की अवधि की दौरान 62 लाख लोगों ने राम मंदिर में रामलला के दर्शन किए। वहीं, भक्तों ने 50 करोड़ की राशि रामलला को चढ़ावे में दान की। ट्रस्ट के कार्यालय के मुताबिक, गर्भगृह के सामने दर्शन पथ के पास चार बड़े आकार की दान पेटियां रखी गई हैं, जिनमें श्रद्धालु दान कर रहे हैं। इसके अलावा 10 कम्प्यूटरीकृत काउंटरों पर भी लोग दान करते हैं। इन दान काउंटरों पर मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारियों को नियुक्त गया है, जो शाम को काउंटर बंद होने के बाद प्राप्त दान राशि का हिसाब ट्रस्ट कार्यालय में जमा करते हैं। 14 कर्मचारियों की एक टीम चार दान पेटियों में आए चढ़ावे की गिनती कर रही है, जिसमें 11 बैंक कर्मचारी और तीन मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारी शामिल हैं। दान राशि जमा करने से लेकर उसकी गिनती तक सब कुछ सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में होती है।

पूर्व चेयरमैन समेत कई दर्जनों ने नेताओं ने ली भाजपा की सदस्यता

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। भाजपा जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान की अध्यक्षता में आयोजित मिलन समारोह में पूर्व चेयरमैन समेत दो सौ से अधिक प्रधान, बीडीसी, सभासद व अन्य दलों के नेताओं ने पीएम नरेंद्र मोदी की नीतियों से प्रभावित होकर भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

सदस्यता ग्रहण करने वालों में नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर के पूर्व अध्यक्ष श्याम बिहारी जायसवाल, पूर्व प्रत्याशी नगर पंचायत दुमरियागंज श्याम सुंदर अग्रहरि, शक्ति जायसवाल, ओम प्रकाश यादव, डॉ. अब्दुला आदि शामिल रहे।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–

चतुर्मुखी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट

अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–

आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, रेकंटर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–

इलाहीबाग गोरखपुर।

मो0 9450567450 9336715406,

ई.मेल bhartiyabasti@yahoo.com

bhartiyabasti@gmail.com